# B. ANALYSIS OF PERFORMANCE

## SECTION A

**Question 1.**

Write a composition in HINDI in approximately 400 words on any ONE of the topics given below:- [20]

निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग **400** शब्दों में **हिन्दी** में निबन्ध लिखियेः–

(a) विज्ञान की चमत्कारिक देन 'कम्प्यूटर' आज के युग में अति आवश्यक है। इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करें।

(b) समाज सेवा – सच्ची मानव सेवा।

(c) शिक्षा का व्यवसायीकरण ही शिक्षा के स्तर में गिरावट का कारण है – पक्ष या विपक्ष में अपने विचार लिखिए।

(d) किसी पर्वतीय स्थल की यात्रा का वर्णन कीजिए जो आपके जीवन की अविस्मरणीय यात्रा बन गई हो।

(e) ''जिसने अनुशासन में रहना सीख लिया उसने जीवन का सबसे बड़ा खज़ाना पा लिया।'' विवेचन कीजिए।

(f) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर मौलिक कहानी लिखिएः–

  (i) अस्पताल में बहुत भीड़ देखकर मन परेशान हो गया .......।

  (ii) एक कहानी जिसका अन्तिम वाक्य होगा ........''इसलिए कहते हैं नैतिक पतन से देश का पतन होता है।''

<u>परीक्षकों की टिप्पणियाँ</u>

(a) विषय को सरल समझकर इस विषय का चयन अपेक्षाकृत अधिक छात्रों ने किया। केवल कुछ छात्रों ने विषय को अच्छी तरह समझ कर अपने विचार व्यक्त किये। अधिकांश छात्रों ने कम्प्यूटर के सन्दर्भ में केवल औपचारिकता की निर्वाह कर प्रयास किया।

(b) 'समाज सेवा–सच्ची मानव सेवा' विषय का चयन बहुत ही कम परीक्षार्थियों ने किया। जिन्होंने इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये, वे समाजसेवा की व्याख्या नहीं कर सके। समाज सेवा से जुड़े महापुरूषों का भी सम्यक ज्ञान कई छात्रों को नहीं था। अधिक्तर छात्र केवल मदर टेरेसा के व्यक्तित्व और सेवाभाव से ही परिचित थे।

*<u>अध्यापकों के लिए सुझाव</u>*

– अध्यापकों को चाहिए कि परीक्षार्थियों को इस तथ्य से परिचित कराये कि सर्वप्रथम चयनित विषय को अच्छी तरह पढ़ें तथा उसकी भाषा को समझें कि परीक्षक का आशय क्या है, वह परीक्षार्थियों से क्या जानना चाहता है? विज्ञान क्या है, विज्ञान के आविष्कार कम्प्यूटर से जुड़ी विशेष जानकारी, उपयोगिता, हानि–लाभ आदि देना अति आवश्यक है।

(c) अधिकांश परीक्षार्थी विषय को अच्छी तरह समझ नहीं पाये, फलतः व्यवसायीकरण को स्पष्ट नहीं कट पाये। पक्ष और विपक्ष में से एक पर लिखने के स्थान पर दोनों पर अपने विचार प्रस्तुत किये। बहुत ही कम परीक्षार्थियों ने इस विषय का चयन किया।

(d) अनेक परीक्षार्थी पर्वतीय स्थल की यात्रा और सामान्य यात्रा को एक ही समझ बैठे, भेद नहीं कर पाये। कुछ ने पर्वतीय स्थल की यात्रा के स्थान पर नगर विशेष का वर्णन किया और कुछ ने यात्रा को ही प्रधानता देकर वर्णन किया। यह यात्रा एक अविस्मरणीय यात्रा कैसे बनी यह स्पष्ट नहीं किया गया।

(e) बहुत से परीक्षार्थियों ने 'अनुशासन' शब्द की व्याख्या नहीं की, उसे परिभाषा बद्ध नहीं किया। 'खजाना' और 'जीवन' में क्या सम्बन्ध है, यह स्पष्ट नहीं किया और न ही यह बताया कि अनुशासन को जीवन का खजाना कैसे माना गया है।

(f) (i) मौलिक कहानी लेखन में अधिकतर परीक्षार्थी उपयुक्त विषय वस्तु प्रस्तुत करने में अक्षम रहे।

(g) (ii) इस विषय का चयन बहुत कम परीक्षार्थियों ने किया। छात्र विषय को समझ नहीं पाये अतः भटक गये। 'व्यक्ति' और 'देश' में क्या सम्बन्ध, नैतिकता का पतन देश का पतन है, यह स्पष्ट नहीं कर पाये।

– समाज और समाज सेवा को अच्छी तरह से परिभाषित करना, समाज तथा मानव सम्बन्धों पर पर्याप्त प्रकाश डालना, पौराणिक एवं ऐतिहासिक उदाहरण देकर विषय वस्तु का हृदयंगम कराना आदि बिन्दुओं को ध्यान में रखकर परीक्षार्थियों का मार्गदर्शन किया जाना चाहिए।

– परीक्षार्थियों को पक्ष एवं विपक्ष पर विचार व्यक्त करने का सम्यक बोध कराया जाना चाहिए। शिक्षा का तात्पर्य, मूल उद्धेश्य, व्यवसायीकरण का अर्थ, वर्तमान शिक्षा और व्यवसाय में सम्बन्ध से अवगत कराना, चाहिए।

– कथित त्रुटियों का सुधार करने के लिए मुख्यतः दो बिन्दु विचारणीय हैं–

(i) कौन से पर्वतीय स्थल आकर्षण के केन्द्र हैं, उनका बोध कराना तथा किस पर्वतीय स्थल की यात्रा की गयी है उसका स्पष्ट उल्लेख करना। यात्रा कहाँ तक सम्पन्न हुई और कैसे, आदि।

(ii) यात्रा अविस्मरणीय होने का कारण

(a) सुखद अथवा (b) दुःखद अथवा (c) कोई प्रेरक व्यक्ति वस्तु या स्थान का स्पष्ट उल्लेख

– अध्यापक परीक्षार्थियों को "अनुशासन" का अर्थ समझाएँ–जिस प्रकार जीवन को सुखमय बनाने में, व्यावहारिक और उपयोगी वस्तुएँ उपलब्ध कराने में धन की अहं भूमिका है उसी प्रकार पद प्रतिष्ठा मान–सम्मान अर्जित करने के लिए अनुशासन की भूमिका है।

– (i) अध्यापकों को चाहिए कि वे परीक्षार्थी वर्ग को 'कहानी' और 'मौलिक कहानी' में अन्तर स्पष्ट करें तथा कहानी के तत्वों का ज्ञान करायें। यह भी स्पष्ट करें कि कहानी और आत्मकथा शैली में लिखी गयी कहानी भिन्न होती है।

(ii) अध्यापक परीक्षार्थियों को 'नीति', 'नैतिकता' और 'नैतिक पतन' आदि की अच्छी तरह से व्याख्या करके सरलतम विधि से समझाएँ और ऐतिहासिक और पौराणिक आधार पर नैतिकता और नैतिक पतन से जुड़े उदाहरण प्रस्तुत करें जिससे कथ्य और विषयवस्तु स्पष्ट हो जाए।

अंक योजना

**Question 1**

(a) विज्ञान के बहुत से चमत्कार………..कम्प्यूटर का विशेष वर्णन……….dEI;wVj ds cgqr ls ykHk……………dqN uqdlku………..ijUrq vkt ds ;qx esa dEI;wVj vfrvko';dA

(b) izLrkouk&lekt lsok ls D;k le>rs gSa-------------lsok Hkko dSls mRiUu gksrk gS----------lsok ?kj ls gh 'kq: dh tkrh gS------------dqN egkiq:"kksa ds mnkgj.k---------ftUgksaus cky&fookg] lrh&izFkk] L=h&f'k{kk] ngst izFkk] fo/kok fookg dk leFkZu vkfn {ks=ksa esa dke fd;k-----------vkt lekt dh D;k fLFkfr gS--------fdu {ks=ksa esa lsok dh cgqr vko';drk gS-----------milagkjA

(c) izLrkouk---------f'k{kk dk izkphu i{k----------vkt dh f'k{kk iz.kkyh-----------f'k{kk dk cnyrk #i------------f'k{kk dk iw.kZr% O;olk;hdj.k------bl O;olk;hdj.k ds dkj.k f'k{kk ds Lrj esa fxjkoV gS--------blds i{k ;k foi{k ,d i{k ij fo|kFkhZ vius fopkj fy[ksxkA

(d) ioZrh; LFky vkd"kZ.k dsUnz----------dkSu dkSu ls ioZrh; LFky vkd"kZ.k dsanz gSa------------fdl fdl LFkku ij fo|kFkhZ x;k-----------dkSu ls ioZrh; LFky dh ;k=k vfoLe.kh; cu xbZ---------vfoLe.kh; gksus dk dkj.k vo'; gksuk pkfg,---------milagkjA

(e) izLrkouk-----------vuq'kklu dh ifjHkk"kk--------vuq'kklu ds ykHk---------dksbZ mnkgj.k fd vuq'kklu esa jgus ls fdl izdkj ftUnxh lqfo/kktud rFkk eaxye;h-----------thou ruko eqDr---------[kqf'k;k¡¡ gh [kqf'k;k¡-------fu"d"kZA

(f) (i) fo|kFkhZ ,d ekSWfyd dgkuh fy[ks ftldk ewy Hkko fn;k x;k fo"k; gksuk pkfg,A

(ii) fo|kFkhZ ekSfyd dgkuh fy[ksaxs ftl dk vfUre okD; fn;k x;k okD; gh gksuk pkfg,A

**Question 2.**

Read the following passage and briefly answer the questions that follow :-

निम्नलिखित अवतरण पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :–

महाभारत का युद्ध जारी था। भीष्म और द्रोणाचार्य का वध हो चुका था और सेनाध्यक्ष पद की बागडोर दुर्योधन ने कर्ण को सौंपी थी। उसके रणकौशल के सामने पाण्डव–सेना के छक्के छूटने लगे। स्वयं अर्जुन भी हतोत्साहित हो गया था। किन्तु कर्ण का दुर्भाग्य कहिए या परशुराम का श्राप, कर्ण के रथ का पहिया कीचड़ में धँस गया। यह देख कर्ण तत्काल रथ से कूदा और उसे निकालने की कोशिश करने लगा।

श्रीकृष्ण ने कर्ण की यह स्थिति देख अर्जुन को उस पर बाणवर्षा जारी करने का इशारा किया। अर्जुन ने उनके निर्देशों का पालन किया, जिससे कर्ण बाणों के आघात को सहन न कर सका। वह अर्जुन से बोला, ''महाधनुर्धर, थोड़ी देर रूक जाओ। क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता कि मेरा ध्यान रथ का पहिया निकालने में जुटा हुआ है? क्या तुम नहीं जानते कि जो योद्धा रथविहीन हो, जिसके शस्त्र नष्ट हो गये हो, या जो निहत्था हो, युद्ध रोकने की प्रार्थना कर रहा हो, ऐसे योद्धा पर धर्मयुद्ध के ज्ञाता और शूरवीर शस्त्र प्रहार नहीं करते? इसलिये महाबाहो! जब तकमैं इस पहिये को न निकाल लूँ, मुझ पर प्रहार न करो, क्योंकि यह धर्म के अनुकूल नहीं होगा।''

कर्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया यह उपदेश श्रीकृष्ण को शूल की तरह चुभा। वे कर्ण से बोले, ''बड़े आश्चर्य की बात है कि आज धर्म याद आ रहा है। सच है कि जब नीच मनुष्य विपत्ति में पड़ता है, तो उसे अपने कुकर्मों की याद तो नहीं आती, मगर दूसरों को धर्मोपदेश का विचार अवश्य आता है। उचित होता, तुमने अपने धूर्त कर्मों और पापों का विचार किया होता! हे महावीर कर्ण! जब दुर्योधन के साथ मिलकर तुमने पाण्डवों के लिए लाक्ष्यगृह बनवाया, भीम को खत्म करने के इरादे से विष दिलवाया, तेरह वर्ष की अवधि समाप्त होने के बाद भी पाण्डवों को खत्म करने के इरादे से विष दिलवाया, तेरह वर्ष की अवधि समाप्त होने के बाद भी पाण्डवों को राज्य नहीं दिया, द्रौपदी का चीरहरण करवाया, निहत्थे अभिमन्यु को तुम्हारे समेत सात महारथियों ने मारा, तब तुम्हारा धर्मज्ञान कहाँ गया था? क्या तुम्हें तब धर्मपालन की विस्मृति हो गयी थी?''

कर्ण को इसका उत्तर देते न बना। वह अर्जुन की बाणवर्षा के सामने टिक न सका और धराशायी हो गया।

प्रश्न :

(a) भीष्म और द्रोणाचार्य की मृत्यु के बाद दुर्योधन ने सेनाध्यक्ष की बागडोर किसे सौंपी और क्यों? [4]

(b) युद्ध के मैदान में कर्ण के साथ क्या घटना घटित हुई? [4]

(c) लगातार बाणवर्षा के आघात को सहन न कर सकने पर कर्ण ने अर्जुन को रोकते हुए क्या कहा? [4]

(d) कर्ण की उपदेश भरी बातों को सुनकर श्रीकृष्ण ने क्या जवाब दिया? [4]

(e) प्रस्तुत गद्यांश को पढ़कर आपको क्या शिक्षा मिलती है? समझाकर लिखिए। [4]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

(a) प्रस्तुत प्रश्न का अन्तरार्थ परीक्षार्थी नहीं समझ पाये अतः उपयुक्त उत्तर देने में असमर्थ रहे।

(b) उत्तर उपयुक्त एवं सटीक थे।

(c) अधिकांश परीक्षार्थियों ने उपयुक्त उत्तर दिया। कुछ विद्यार्थियों ने अत्यन्त संक्षिप्त उत्तर दिये। कुछ ने प्रश्नपत्र के गद्यांश की शब्दावली ही उतार दी।

(d) अधिकांश छात्रों ने उत्तर उपयुक्त एवं सटीक दिया। कुछ परीक्षार्थियों ने श्रीकृष्ण द्वारा कही गयी सभी बातें न लिखकर संकेत मात्र दिया।

(e) गद्यांश से मिलने वाली शिक्षा कुछ विद्यार्थियों ने उपयुक्त ढंग से दी किन्तु कुछ उपयुक्त शिक्षा लिखने में असमर्थ रहे।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– छात्रों का मार्ग दर्शन इस प्रकार करें कि वे प्रश्न पत्र बड़े ध्यान से पढ़ें तथा गद्यांश को अच्छे ढ़ंग से पढ़कर उसका अर्थ समझें और सम्बन्धित प्रश्नों की भाषा समझकर यह जाने कि अमुक प्रश्न का उत्तर क्या है, और उत्तर कितना लिखना है। प्रश्न के प्रत्येक भाग का अलग–अलग उत्तर देने का अनिवार्य रूप से प्रयास कराऐं।
– अपठित गद्यांश का निरन्तर अभ्यास करने का निर्देश दिया जाना चाहिए।
– छात्रों को गद्यांश पढ़कर प्रश्नानुसार अपने शब्दों में उत्तर लिखने का अभ्यास कराया जाना चाहिए।
– कोई भी कहानी, पाठ या गद्यांश पढ़ाने के बाद उससे मिलने वाली शिक्षा का ज्ञान कराया जाना चाहिए तथा तदनुसार अभ्यास की प्रेरणा देनी चाहिए।

**अंक योजना**

**Question 2**

(a) Hkh"e vkSj nzks.kkpk;Z dh e‘R;q ds Ik’pkr nq;ksZ/ku us d.kZ dks viuk lsuk/;{k cuk;k D;ksafd og ,d ’kwjohj ;ks/nk Fkk mlds j.kdkS’ky ds lkeus ik.Mo lsuk dk fVd ikuk lEHko u Fkk] ;gk¡ rd fd vtqZu Hkh d.kZ ds lkeus ?kcjk tkrk Fkk] ,slk nq;ksZ/ku dks fo’okl FkkA

(b) nqHkkZX;o’k ;q/n ds eSnku esa d.kZ ds jFk dk ifg;k dhpM+ es /k¡l x;k d.kZ us rRdky jFk ls mrj dj mls fudkyus dh dksf’k’k dh ijUrq og mls fudkyus esa vleFkZ jgk m/kj Jhd‘".k us ekSds dk Qk;nk mBkrs gq, vtqZu ls d.kZ ij yxkrkj ck.ko"kkZ djus dks dgk vtqZu us Hkh d‘".k dk dguk ekurs gq, yxkrkj d.kZ ij ck.ko"kkZ tkjh j[khA

(c) d.kZ us vtqZu dks jksdrs gq, dgk egk/kuq/kZj rqe dqN le; ds fy, okj djuk can dj nks D;ksafd rqe ns[k jgs gks fd eSa vius jFk dk ifg;k fudkyus esa O;Lr gw¡ vkSj rqe ;q/n ds fu;e tkurs gks fd ;q/n esa ;fn ;ks/nk jFkfoghu gks ;k fdlh ;ks/nk ds ‘’kL= u"V gks x;s gksa ;k og fugRFkk gks vkSj ;q/n dks jksdus dh izkFkZuk dj jgk gks rks ,sls ;ks/nk ij /keZ;q/n ds Kkrk vkSj ohj iq#"k okj ugh djrs A blfy, tc rd eSa jFk dk ifg;k ckgj u fudky yw¡ rc rd rqe

eq> ij rhj er pykvks D;ksafd /keZ ds vuqlkj ;g mfpr ugh gksxkA

(d) d.kZ dh mins’k Hkjh ckrsa lqudj Jhd‘".k us tokc nsrs gq, dgk fd vc rqEgsa /keZ dh ckrsa ;kn vk jgh gSa tc rqe foifÙk es iM+s gks] rc rqEgkjk /keZ dgk¡ Fkk tc rqeus nq;ksZ/ku ds lkFk feydj yk{kkx‘g cuok;k Fkk ik.Moksa dks ftUnk tykus ds fy,] Hkhe dks fo"k nsdj ekjus dk iz;kl fd;k] rsajg o"kZ lekIr gksus ij Hkh ik.Mo dk jkT; okfil ugh fd;k] nzkSinh dk phj gj.k djok;k] bruk gh ugh rqEgkjs lesr lkr egkjfFk;ksa us feydj vdsys vfHkeU;q dks ?ksj dj ekj Mkyk rc rqEgkjk /keZ Kku dgk¡ x;k Fkk] ml le; rqEgsa /keZ ikyu dh ;kn ugh vkbZA

(e) izLrqr x|ka’k dks i<+dj gesa ;g f’k{kk feyrh gS fd gesa ges’kk /keZKku vFkkZr fu;eksa dks ;kn j[kuk pkfg, foifÙk ds le; LokFkZo’k fu;eksa ;k /keZ dks ;kn djuk uhprk gS og balku uhp gh gksrk gS tks viuh ckjh vkus ij /keZ dh ckr djrk gSa vkSj nwljksa dh ckjh esa ?ke.M esa pwj jgdj nwljksa dks uqdlku igq¡pkrk gS] tSlk fd d.kZ us bl x|ka’k esa fd;k FkkA

**Question 3.**

(a) Correct the following sentences :- [5]

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :–

(i) गर्म गाय का दूध स्वास्थ्यवर्धक होता है।

(ii) कृप्या मेरे पत्र पर ध्यान देने की कृपा करें।

(iii) प्रत्येक व्यक्तियों का यह कर्तव्य है।

(iv) बच्च्या दूध को रो रहा है।

(v) मैंने उसे हज़ार रूपया दिया।

(b) Use the following idioms in sentences of your own to illustrate their meaning :- [5]

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–

(i) खाक छानना।

(ii) घोड़े बेच कर सोना।

(iii) नाक में दम करना।

(iv) दिन फिरना।

(v) मीन मेख निकालना।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

(a) इस भाग में छात्रों ने वर्तनी, वर्ण, मात्रा तथा वचन समबन्धी अशुद्धियाँ कीं।

(b) (i) कुछ परीक्षार्थियों ने अर्थभ्रम होने के कारण, प्रयोग में गलती की।

(ii) कुछ परीक्षार्थियों ने भ्रमवश मुहावरे के स्थान पर उसके अर्थ का वाक्य प्रयोग करने की गलती की।

(iii) छात्रों द्वारा सन्तोष जनक वाक्य प्रयोग किया गया।

(iv) कुछ परीक्षार्थियों ने मुहावरे का सही अर्थ समझने की चेष्टा नहीं की जिससे प्रयोग में गलती हुई।

(v) अधिकांश छात्रों ने मुहावरे का उपयुक्त प्रयोग किया।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– विद्यार्थियों को वर्ण, बिन्दु और मात्राओं का अभ्यास कराया जाना चाहिए। वाक्य में कारक और अन्वय सम्बन्धी अशुद्धि को सुधारने के लिए कारक और अन्वय का अभ्यास कराया जाय।

– एक वचन और बहुवचन का पर्याप्त अभ्यास कराया जाना चाहिए।

– वर्तनी अभ्यास अनिवार्य रूप से कराया जाय।

– छात्रों को मुहावरों का सही अर्थ और तदनुसार प्रयोग का अभ्यास कराया जाना चाहिए।

– अध्यापक को चाहिए कि छात्रों को सुनिश्चत रूप से यह ज्ञान और अभ्यास कराये कि वे मुहावरे का ही समुचित प्रयोग करें अर्थ का नहीं।

**अंक योजना**

**Question 3**

(a) वाक्यशुद्धिकरण–

(i) xk; dk xeZ nw/k LokLF;o/kZd gksrk gSA

(ii) d‘Ik;k esjs i= ij /;ku nsaA @ esjs i= ij /;ku nsus dh d‘ik djsa @ esjs i= ij d‘I;k /;ku nsaA

(iii) izR;sd O;fDr dk ;g dÙkZO; gSA

(iv) cPpk nw/k ds fy, jks jgk gSA

(v) eSaus mls gtk+j #i;s fn,A@ eSaus mldks gt+kj #i;s fn;sA

(b) मुहावरे–

(i) ekjs ekjs fQjuk &&& csjkstxkjh ds dkj.k yk[kksa ukStoku lM+dks dh [kkd Nkurs fQjrs gSaA

(ii) fuf’pUr gksdj lksuk &&& ijh{kk,¡ lekIr gksus ij fo|kFkhZ ?kksM+s cspdj lksrs gSaA

(iii) rax djuk &&& NqfVV;ksa esa cPps viuh ek¡¡ dh ukd esa ne dj nsrs gSaA

(iv) fdLer iYkV tkuk &&& csVs dh ukSdjh yxrs gh oekZ th ds fnu fQj x,A

(v) xyfr;k¡ fudkyuk &&& lksfu;k dks ehu es[k fudkyus dh vknr gSaA

## SECTION B

## काव्य – तरंग

**Question 4.**

कबीर सच्चे अर्थों में युगद्रष्टा थे। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से क्या संदेश दिया है? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

प्रस्तुत प्रश्न के दो भाग थे।

(i) कबीर सच्चेयुग दृष्टा थे।

(ii) उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से क्या सन्देश दिया है?

परीक्षार्थियों ने उपर्युक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखकर प्रश्नानुसार उत्तर नहीं दिया।

कुछ परीक्षार्थियों ने तो विषय वस्तु ही बदल दी, कबीर के स्थान पर सूरदास, तुलसीदास रहीमदास आदि से सम्बन्धित विषय वस्तु को प्रस्तुत किया। अनेक विद्यार्थियों ने कबीर की शिक्षा और सन्देश पर प्रकाश डालने की चेष्टा की किन्तु विषय–वस्तु से सम्बन्धित उद्धरण प्रस्तुत नहीं किये।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– अध्यापक बन्धुओं को अपने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने के लिए कबीर के व्यक्तित्व पर पर्याप्त प्रकाश डालना चाहिए। कबीर तत्वज्ञ थे, वे अपने युग की परिस्थितियों से पूर्व परिचित थे। लोकग्राही सन्त होने के नाते वे लोक कल्यान चाहते थे अतः उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, सामाजिक और धर्मिक बुराइयों को दूर कर ऊँच–नीच की भावना से रहित स्वस्थ मानसिकता से ओत–प्रोत समता मूलक समाज की स्थपना का भरसक प्रयास किया।

– उत्तर सर्वदा प्रश्न के अनुसार ही दिया जाना चाहिए। उत्तर की विषयवस्तु प्रश्न के अनुकूल होनी चाहिए, उससे हटकर या भिन्न नहीं।

– निर्गुण काव्यधारा के ज्ञानमार्गी सन्त कबीरदास जी इस तथ्य से सुपरिचित थे कि हिन्दू संस्कृति और मुस्लिम संस्कृति की संक्रान्ति देश और समाज को प्रभावित करेगी अतः उन्होंने एकेश्वरवाद, जाति–पाँति एवं वर्ण भेद तथा ऊँच–नीच की भावना का त्याग करने, कर्मकाण्ड को महत्व देने के स्थान पर आडम्बर रहित होकर सच्चे मन से ईश्वर की उपासना का सन्देश दिया। आदि–आदि बातें मार्गदर्शन योग्य हैं।

अंक योजना

**Question 4**

भक्तिकालीन काव्य जगत में कबीर कवि रूप में कम, समाज–सुधारक के रूप में अधिक जाने जाते हैं। कविता करना उनका उद्देश्य नहीं था। वे एक महान संत थे

उन्होंने पुस्तकें पढ़कर ज्ञान प्राप्त नहीं किया था अपितु गुरु के चरणों में, साधु संगति से और अपने घुमक्कड़ी स्वभाव से ज्ञान प्राप्त किया था। देश के अनेक स्थानों पर घूमने के कारण उनका ज्ञान विस्तृत और अनुभवजन्य था। इस प्रकार कबीरदास अशिक्षित होते हुए भी अत्यन्त ज्ञानी थे। उनके दोहों को ''साखी'' कहा जाता है। ''साखी'' का अभिप्राय जीवन के उस प्रत्यक्ष अनुभव से है जिसे कबीर ने किया और उसे उपदेश के रूप में जनता के सामने रखा। वे निर्गुण भक्ति काव्य धारा के कवि थे, उन्होंने भगवान का नाम निर्गुण ब्रह्म के लिए लिया । कबीर ज्ञानमार्गी थे। उनके काव्य के मूल में सहज आत्मिक अनुभूति थी। उन्होंने जितनी कविताएँ रची सब मौखिक थी। उनके शिष्यों ने कबीर बीजक में उन्हें संग्रहित किया। उन्होने अपनी साखियों और पदों में समाजिक बुराइयों और कुरीतियों की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया। हिन्दू–मुस्लिम एकता पर विशेष बल दिया। उन्होने अंधविश्वास और धार्मिक आडम्बरों पर तीखा प्रहार किया है। प्रेम, अध्यात्म, गुरु गौरव, अंधविश्वास विरोध, मूर्तिपूजा और सामाजिक बुराइयों का विरोध उनके काव्य के विषय थे।

कबीर अपने दोहों में गुरु का महत्त्व ब्रह्म से भी बढ़कर मानते है। सच्चे गुरु की महिमा असीम है। उसने हमारे ऊपर अनेक उपकार किए हैं। हमारी मन की आँखे खोलकर दिव्य दृष्टि दी है। इस दिव्य दृष्टि के कारण ही ईश्वर के दर्शन हो पाए हैं।

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावन हार।।

कबीर ने हमें समझाया है कि सच्चें ज्ञान से, जो सतगुरु द्वारा मिलता है, संसार से मुक्ति संभव हो सकती है। क्योंकि संसार में माया–मोह मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मनुष्य माया–मोह में फँसकर रह जाता है। माया को दीपक की लौ कहा है। मनुष्य को पतंगा कहा है जो दीपक के चारों ओर खिंचा चला जाता है। दीपक की लौ के चारों ओर मँडरा कर वह अपने प्राण दे देता है। एकाध पंतगा ही उस लौ से बच पाता है। सच्चे गुरु द्वारा दिया ज्ञान ही मनुष्य को सांसारिक बन्धनों से मुक्त रखता है।

मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार ही यश अर्जित करता है। वंश और परिवार के कारण कोई व्यक्ति महान नहीं बनता। भले ही हमारा जन्म उच्च कुल में हुआ हो परन्तु यदि हमारे कर्म निकृष्ट हैं तो हमें बड़े होने का गौरव नहीं मिल पाएगा। सोने के बर्तन में यदि मदिरा भर दी जाए तो मदिरा के कारण उस बर्तन की भी बुराई होगी। अच्छे परिवार में जन्म लेना इतना महत्त्वपूर्ण नहीं बल्कि हमारे कर्म अच्छे होने चाहिए। कबीर सत्य के उपासक थे इसलिए उन्होने सदाचारपूर्ण जीवन पर बल दिया है।

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरण कलस सुरै भर्‍या, साधू निंदा सोइ।।

कबीर ने बाह्म आडम्बरों की निस्सारता की ओर मनुष्य का ध्यान आकृष्ट किया है। वे कहते हैं कि मन के विकार दूर करने से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है। बालों को काटने की अपेक्षा मन के दोषों को दूर करना ही लाभदायक है। संन्यास लेने पर मनुष्य बाल कटवाता है पर मन में अनेंक विकार भरे रहतें हैं। इससे अच्छा है कि मन को मुंडवाओ अर्थात मानसिक बुराइयों को दूर करके मन पर नियन्त्रण रखो। जब तक मन शुद्व नहीं होगा, बाहरी दिखावे से कुछ नहीं होगा।

कवि ने तन को योगी बनाने की अपेक्षा मन को योगी बनाने पर बल दिया है। क्योंकि मन के योगी होने पर सभी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

केसन कहा बिगाड़िया, जो मूंडे सौ बार।

मन को काहे न मूंडिए, जामै भरा विकार।।

कबीर ने समाज में रहने वाले शत्रु का भी महत्त्व समझाया है। बुराई करने वाला मनुष्य ही वास्तविक रूप में हमारा मित्र है। कबीर आचरण की पवित्रता पर विश्वास करते थे। व्यक्ति में कई  बुराइयाँ होती है जिनका ज्ञान उसे नहीं होता। ये बुराइयाँ उसके आचरण को भ्रष्ट करती है। इसलिए कबीर ने आचरण की पवित्रता के लिए आलोचकों के महत्त्व को बताया है। निन्दा करने वालों से झगड़ा मत करो बल्कि ऐसे लोगों के लिए अपने आँगन में हीएक कुटिया बनवादेनी चाहिए क्योंकि वे हमारी बुराई करेंगे तो हम उन बुराइयों को दूर करने का प्रयास करेंगे जिससे हमें सुधरने का मौका मिलेगा। अपने स्वभाव को शुद्व करने के लिए बुराइयों से मुक्ति पाना आवश्यक है।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाइ।
बिन साबुन पाणी बिना, निरमल करै सुभाइ।।

कबीर आत्मा और परमात्मा की एकता में विश्वास रखते थे। ईश्वर का अस्तित्व हर प्राणी में है । प्राणी का रूप बदल जाता है पर मूल आत्मा एक है। आत्मा परमात्मा का अंश है और अन्त में उसी में समा जाती है जिस प्रकार पानी से ही जमकर बर्फ बनती है और पिघलने पर वह अपने मूल रूप में आ जाती है अर्थात पानी बन जाती है। जिस तत्व से बाहरी रूप बनता है, बाहरी रूप खत्म होने पर वह वैसा ही बन जाता है।

साधु अपने गुण और ज्ञान के कारण ही जाने जाते हैं। अपने ज्ञान का प्रभाव ही वह दूसरों पर छोड़ जाते हैं। इसी तथ्य को उजागर करने के लिए कवि ने साधु के ज्ञान के महत्त्व को दर्शाया है कि साधु की जाति नहीं बल्कि उसका ज्ञान जानना चाहिए।

कबीर ने सत्संगति और संत समागम द्वारा ज्ञान प्राप्त किया था। कबीर ने ईश्वर को इन्द्रियों के अनुभव की वस्तु न मानकर ज्ञान द्वारा अनुभव करने को कहा है और वह ज्ञान सच्चें साधु से प्राप्त होता है इसलिए साधु की जाति नहीं देखनी चाहिए, उसे उसके ज्ञान से आँकना चाहिए। तलवार की कीमत आँकनी चाहिए, न कि उसके म्यान की

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान।।

कबीर ने इस शरीर रूपी पिंजरे के दस दरवाजे बताए हैं। जिसमें आत्मा रूपी पंछी रहता है। यह आश्चर्य की बात है कि शरीर के दस दरवाजे होते हुए भी पक्षी कैद में रहता है यदि वह इस पिंजरे को छोड़कर उड़ जाता है तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।

कबीर ने वाणी के महत्त्व को दर्शाया है। ईश्वर द्वारा दिया गया वाणी का वरदान मनुष्य के लिए अमूल्य है। वाणी की सार्थकता सही सोच–समझकर बोलने में ही है। बोलने से पहले ह्रदय रूपी तराजू में तौल–तौल कर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

बोली एक अमोल है, जो कोई  बोलै जानि।
हिये तराजू तौलिके, तब मुख बाहर आनि।।

कबीर ने अपने एक नीतिपरक दोहे में इस तथ्य को स्पष्ट किया है कि सोना, सज्जन व्यक्ति व साधुजन टूटने या रूठने पर फिर से मिल जाते हैं। लेकिन दुष्ट व्यक्ति कुम्हार के उस घड़े की तरह हैं जिसमें एक धक्के से दरार पड़ जाती है, फिर वह जुड़ती नहीं है।

सोना, सज्जन, साधु–जन, टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन, कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार।।

कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए ध्यान को अधिक महत्त्व दिया है। एकाग्रचित्त से ध्यान करके ईश्वर की प्राप्ति की जा सकती है।

कबीर खरी–खरी बातों को बड़े साफ ढंग से कहते हैं। वे मानवीय करुणा से युक्त, निर्भीक और अक्खड़ स्वभाव के थे। अनपढ़ होने के बावजूद अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों का अत्यन्त सुन्दर और वास्तविक चित्रण उन्होंने कविता में किया है। युग को दिशा देने की दृष्टि से कबीर का विशेष महत्त्व है। इसलिए उन्हें युगद्ष्टा भी कहा जाता हैं।

**Question 5.**

''भारत महिमा'' कविता में कवि ने भारत की किन विशेषताओं का वर्णन किया है? इस कविता द्वारा कवि हमें क्या संदेश दे रहे हैं? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर अनेक छात्रों ने अच्छी तरह से दिया। कुछ ने भारत की विशेषताओं का सामान्य वर्णन कर दिया और सन्देश छोड़ दिया। अनेक छात्रों ने वर्ण, बिन्दु और मात्रा तथा वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ की।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– अध्यापक बन्धु छात्रों का मार्गदर्शन उपर्युक्त बातें बताकर कर सकते हैं। कवि ने अपनी कविता के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत होने का सन्देश दिया है।
– छात्रों को प्रश्न पूरी तरह पढ़कर उसका सभ्यक उत्तर देने का निर्देश दें।
– लिखित अभ्यास कराऐं जिससे वर्ण, बिन्दु, मात्रा और वर्तनी की अशुद्धियाँ सुधारी जा सकें।

**अंक योजना**

**Question 5**

जयशंकर प्रसाद एक छायावादी कवि और सौन्दर्य उपासक थे। छायावादी काव्य में प्रकृति के प्रति अनुराग और सौन्दर्य के प्रति मोह दिखाई देता है। जयशंकर प्रसाद मुख्यतः प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं लेकिन जीवन के कल्याण का पक्ष भी उनसे अछूता नहीं है। प्रसाद जी के काव्य में भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा और राष्ट्र–प्रेम की भावना सर्वत्र दिखाई देती है। उन्होने अपने साहित्य के माध्यम से भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के साथ–साथ पूर्वजों के गौरवपूर्ण चरित्र भी उभारे हैं। प्रसाद जी भारतीय इतिहास, संस्कृति और दर्शन के प्रकांड पंडित थे। उनके नाटकों में ऐतिहासिक पात्रों द्वारा भारत देश के प्राचीन गौरव का ऐसा चित्रण किया है कि प्रत्येक देशवासी का मस्तक गर्व से ऊँचा हो जाता है। नाटकों में उन्होने गुप्तकाल को कथावस्तु का विषय बनाया।

भारत–महिमा गीत स्कन्दगुप्त नाटक में देवसेना द्वारा गाया गया है। कवि ने कहा है कि सूर्य सबसे पहले अपनी किरणों की भेंट हिमालय कें आँगन को देता है। उषा भी हँसकर भारत का अभिनंदन करती है और उसे हीरों का हार पहनाती है।

जगे हम लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक

हम भारतवासी सबसे पहले जागे अर्थात् सबसे पहले ज्ञान का उदय भारत देश में हुआ। ज्ञान के क्षेत्र में हमारा देश अग्रणी था। ज्ञान प्राप्त करने के बाद हम भारतीय विश्व को जगाने लगे। सारे विश्व में, जो अज्ञान की निद्रा में डूबा हुआ था, ज्ञान का प्रसार कर अज्ञान के अन्धकार को दूर किया। भारत का अतीत महान था।

संसार में सर्वप्रथम भारत में ही ज्ञान का सूर्य चमका।

विद्या की देवी सरस्वती ने सर्वप्रथम भारत पर ही कृपा की तथा अपने कमल के समान कोमल करों में वीणा धारण की। जब वीणा से सात स्वर निकले तो समस्त आर्यावर्त्त संगीत से भर गया। वे सात स्वर सप्त सिन्धु में गूँज उठे जिसके परिणामस्वरूप सामवेद के मधुर गीतों की रचना हुई।

सप्तस्वर सप्तसिन्धु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम संगीत।।

भारतवर्ष ही वह देश है जहाँ नाव पर बैठकर प्रलय की मुसीबतों को झेलतें हुए सृष्टि के बीज की रक्षा हुई। जल प्लावन प्रलय की बाढ़ में सब कुछ नष्ट हो गया था लेकिन किसी तरह मनु बच गयें। मनु से इस सृष्टि का विकास हुआ। भारत में कला,संगीत और साहित्य का आरम्भ सबसे पहले हुआ है। भारतीय संस्कृति का प्रतीक अरुण–केतन लाल–ध्वज अपने हाथ में लेकर हम सुदूर देशों में प्रेम का संदेश लेकर पहुँचें।

कवि ने भारत के अतीत के गौरवशाली रूप का बड़ा प्रभावपूर्ण चित्रण करते हुए कहा है कि मानव जाति का सम्मान बढ़ाने, त्यागमय जीवन व्यतीत करने तथा परोपकार में भारत अन्य देशों से आगे ही रहा है। हमारी जातीयता का विकास त्याग के कारण ही हुआ है।

सुना है दधीचि का वह त्याग हमारी जातीयता विकास।

ऋषि दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपनी हड्डियाँ वज्र बनाने के लिए दान में दे दी थीं। देवराज इन्द्र ने उन हड्डियाँ से वज्र बनाकर असुरों का संहार किया था।

हमारे देश के अस्थि–युग अर्थात पाषाण युग का इतिहास इस प्रकार के त्याग की गाथा गाता है। अस्थियों से हथियार बनाने की कला भारत की वैज्ञानिक प्रगति की ओर संकेत करती है।

अयोध्या से निर्वासित होने पर भी राम के उत्साह में कमी नहीं आई। उनका उत्साह सागर जैसा विशाल, गहरा और गम्भीर था। सीता–हरण के बाद लंका तक पहुँचने के लिए उन्होंने पुल का निर्माण किया। वह पुल टूटी–फूटी दशा में आज भी रामेश्वरम में उपस्थित है।

वैदिक युग में यज्ञ किए जाते थे तथा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पशुओं की बलि दी जाती थी। धर्म के नाम पर भगवान बुद्व ने इस कुरीति का विरोध किया था।

सम्राट अशोक ने बौद्व धर्म का अनुयायी बनने के बाद धर्म के नाम पर होने वाली यह बलि बंद करवा दी थी। निर्दोष पशु की बलि देना एक जघन्य' कार्य था।

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम।

भिक्षु होकर रहते सम्र्राट दया दिखजाते घर–घर घूम।।

बौद्व धर्म से प्रभावित होने के पश्चात सम्राट अशोक का ह्रदय परिवर्तन हो गया। कलिंग युद्व के बाद उनके मन में हिंसा के प्रति विरक्ति का भाव जाग गया था। उन्होंने राज्य का परित्याग कर बौद्धधर्म ग्रहण कर लिया था और भिक्षु के रूप में जीवन व्यतीत करने लगे।

इस कविता के माध्यम से कवि ने वर्तमान भारतवासियों को प्रेरित करने के लिए भारत के स्वर्णिम अतीत का उल्लेख किया है। महापुरुषों की विशेषताओं का उल्लेख करके आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। कवि कहते हैं कि हम भारतीयों ने कभी किसी से कुछ नहीं छीना अपितु दुनिया को धर्म की सात्विक दृष्टि दी। भारतीय प्राचीन काल से ही वीरता, शौर्य, ज्ञान, दया व दान की प्रतिमा रहे हैं। हमें आर्य जाति की सन्तान होने का गौरव प्राप्त है।

हमारी जन्मभूमि थी यही, कहीं से हम आये थे नहीं।।

कवि ने इस विचारधारा का खण्डन किया है कि आर्य जाति बाहर से अर्थात किसी दूसरे देश से आई थी ।

भारतवासी दान करने के लिए धन का संग्रह करते थे। अनेक जातियों का उत्थान–पतन यहाँ हुआ।

भारतीयों ने अनेक कठिनाइयों और संघषों को हँसते हुए सहा। हमारा चरित्र पवित्र था, भुजाओं में शक्ति थी व स्वभाव में नम्रता थी। हमने अपनी शारीरिक शक्ति का दुरूपयोग कभी नहीं किया। भारतीयों के चरित्र की विशेषता है कि वे अतिथि को देवता मानते है और उसका स्वागत करते हैं। हम सदैव सत्य बोलते हैं। हम अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं। आज भी हमारे शरीर में उन्हीं पूर्वजों का रक्त संचार कर रहा है। हमारा देश भी वही है और हम भी वही हैं। भारतीयों के चारित्रिक गुणों का उद्‌घाटन करते हुए कवि कहते हैं ––

वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान।

हमें अभिमान है भारतीय होने का। हमें सारे गुण अपने पूर्वजों से प्राप्त हुए हैं। देशभक्ति हमारे अन्दर कूट–कूट कर भरी हुई है। हम जीवित रहें तो अपने देश के लिए। इसी के लिए अपने प्राण भी न्योछावर कर दें।

निछावर कर दे हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।।

इस प्रकार भारत–महिमा में भारत की प्राचीन सभ्यता और महिमा का गुणगान करते हुए भारतीयों की उदारता, शांतिप्रियता, निर्भीकता तथा धर्मपरायणता का चित्रण किया गया है। इस कविता में भारत के अतीतकालीन गौरव पर गर्व प्रकट किया गया है।

## Question 6.

''कर्ण ने महाभारत के युद्ध में 'अश्वसेन' नामक सर्प की सहायता न लेकर मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया है''– कथन को स्पष्ट करते हुए कविता का संदेश लिखिए। [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में कुछ परीक्षार्थियों ने मानवतावादी दृष्टिकोण को स्पष्ट नहीं किया, कुछ ने सन्देश पर प्रकाश नहीं डाला, और कुछ ने उत्तर की पुष्टि हेतु काव्य पंक्तियाँ उद्धृत नहीं की।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– परीक्षार्थियों को प्रत्येक प्रश्न अच्छी तरह से पढ़कर उसके प्रत्येक भाग का सभ्यक एवं सम्पूर्ण उत्तर देने का अभ्यास एवं मार्गदर्शन कराना चाहिए। उन्हें इस प्रकार से प्रेरित और शिक्षित करना चाहिए कि वे प्रश्न का कोई भी अंश न छोड़े।
– कवि ने कविता के माध्यम से संदेश दिया है कि किसी भी परिस्थिति में धर्म विरूद्ध मानवता विरूद्ध आचरण नहीं करना चाहिए।

**अंक योजना**

## Question 6

महाकवि रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी साहित्याकाश के वह देदीप्यमान नक्षत्र हैं जिनके प्रकाश से हिन्दी साहित्य सदैव जगमगाता रहेगा। अपने युग के प्रतिनिधि कवि दिनकर जी राष्ट्रीय विचारधारा के कवि हैं। इनकी कविताओं का मूल स्वर सौन्दर्य, प्रेम, राष्ट्रवाद, प्रगतिशीलता, भारत के अतीत का गुणगान, प्रकृति चित्रण तथा क्रान्तिकारी भावना है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी दिनकर जी की कविताओं में ओज के साथ–साथ सच्ची संवेदना के दर्शन होते हैं।

'मनुष्य और सर्प' कविता एक पौराणिक प्रसंग से ली गई है। महाभारत के युद्ध मे कौरव–पाण्डवों के बीच घमासान युद्ध चल रहा था, कर्ण कौरवों की ओर से लड़ रहा था। कुरुक्षेत्र की धरती आग बरसा रही थी। महाभारत का युद्ध क्या था मानों धरती का सुहाग ही जल रहा था। योद्धा एक से एक कुटिल चालों का प्रयोग कर रहे थे। चारों ओर हाथी, घोड़े कट–कट कर गिरे पड़े थे। उनके ऊपर मनुष्यों के कटे हुए अंग जहाँ–तहाँ पड़े थे। चौपायों (जानवरों) और द्विपायों (मनुष्यों) का रक्त एक हो रहा था। वहीं आज का युद्ध कर्ण और अर्जुन के बीच चल रहा था। दोनों ही रण कौशल में निपुण, समान बली और सामर्थ्यशाली थे। दोनों ओर से बराबर बाणों की वर्षा हो रही थी, तभी कर्ण ने देखा कि उसके तरकश से एक अश्वसेन नाम का सर्प फुँकार उठा और उसने युद्ध में कर्ण की सहायता करने का प्रस्ताव रखा। अर्जुन उसका पुराना शत्रु था अतः वह अपनी स्वार्थसिद्धि हेतु कर्ण की सहायता करना चाहता था। कवि के शब्दों में ———

इतने में शर के लिए कर्ण ने, देखा ज्यों अपना निषंग,
तरकस में से फुँकार उठा, कोई प्रचंड विषधर भुजंग।

अश्वसेन सर्प कर्ण से कहने लगा कि तू मुझे अपने धनुष में चढ़ा ले जिससे मैं शत्रु को बेहोशी की नींद सुला सकूँ।

''बस एक बार कर कृपा धनुष पर, चढ़ शख्य तक जाने दे,
इस महाशत्रु को अभी तुरंत, स्पंदन में मुझे सुलाने दे ।

कर्ण बहुत स्वाभिमानी था। उसने अश्वसेन के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। कर्ण एक आदर्शवादी व चरित्रवान पुरुष था उसे यह कार्य अमानवीय लगा। साथ ही आचरण विरुद्ध कार्य करके वह अपने माथे पर कलंक का टीका नहीं लगने देना चाहता था। अतः कर्ण ने अश्सवसेन से कहा कि तू मुझसे यह कुटिल बात क्यों कहता है? तू मुझसे आचरण विरुद्ध कार्य करने के लिए कह रहा है। मैं मनुष्य होकर सर्पो की सहायता से विजय प्राप्त करूँ———यह मानवता के विपरीत कार्य है। कवि कहते हैं ——

''उस पर भी साँपों से मिलकर मैं मनुज, मनुज से युद्ध करूँ ?
जीवन–भर जो निष्ठा पाली, उससे आचरण विरुद्ध करूँ ?

कर्ण का यह मानवतावादी दृष्टिकोण था कि युद्ध में सर्प की सहायता से भले ही उसे विजय प्राप्त हो जाये पर यह अनुचित कार्य है। सर्प तो मानवता का शत्रु है, यदि उसने अर्जुन के वध के लिए सर्प का सहारा लिया तो आनेवाली मानवता को अपना मुँह कैसे दिखाएगा? आने वाली पीढ़ी उसे वीर नहीं बल्कि ''इंसान के नाम पर कलंक'' कहेगी –

'तेरी सहायता से जय तो, मैं अनायास पा जाऊँगा,
आनेवाली मानवता को, लेकिन क्या मुख दिखलाऊँगा?

कर्ण अश्वसेन के प्रस्ताव को ठुकराते हुए कहता है कि आज मानव रूपी सर्प समाज के बीच छिपे हुए हैं जो हर नगर, गाँव और स्थान पर मिल जाएँगे। ऐसे लोग चुपचाप मानवता को डस कर सच्चाई का, पुण्य का मार्ग कठिन कर देते हैं। नीच–पापी लोग ही इन सर्पो की सहायता लेते हैं। वीरों का तो अपनी भुजाओं की शक्ति में विश्वास रहता है। अर्जुन भले ही मेरा शत्रु है लेकिन वह सर्प जाति का नहीं अपितु नर है। फिर यह शत्रुता इसी जन्म में समाप्त भी हो जाएगी, तब मैं ईर्ष्या की आग में जलकर अपना परलोक क्यों बिगाडूँ——

''अगला जीवन किसलिए भला, तब हो द्वेषांध बिगाडूँ मैं,
साँपों की जाकर शरण, सर्प बन, क्यों मनुष्य को मारूँ मैं?''

अन्त में कर्ण सर्प की सहायता न लेकर अपने को कलंकित होने से बचा लेता है और अपने मानवता के सिद्धान्त को मिटने नहीं देता। इस कविता से हमें यही संदेश मिलता है कि मानव को अपने आचरण के विरुद्ध कार्य नहीं करना चाहिए। अपनी आत्मा व स्वाभिमान को बेचकर अनीतिपूर्ण कार्य करने से इहलोक तो बिगड़ता ही है साथ ही परलोक भी बिगड़ जाता हैं। कर्ण का दृष्टिकोण मानवतावादी है कि युद्ध में सर्प की सहायता से विजय चाहे मिल जाए लेकिन सर्प तो मानवता का शत्रु है अतः उसका सहारा लेना उचित नहीं है। कविता का उद्देश्य

यही है कि चाहे मनुष्य को कितनी भी विपत्तियों का सामना करना पड़े या अपने प्राणों की बाजी ही क्यों न लगानी पड़े पर उसे कभी भी नियम के विरुद्ध कार्य नहीं करना चाहिए। अपने शत्रु के साथ भी धर्मसंगत कार्य करना चाहिए। अपनी आने वाली पीढ़ी का ध्यान रखते हुए कर्ण ने नियम के विरुद्ध कार्य नहीं किया। इस प्रकार कर्ण का आदर्श चरित्र आने वाली मानवता को एक बड़ा संदेश दे जाता है।

## निर्मला

**Question 7.**

''पर यह कौन जानता था कि यह सारी लीला विधि के हाथों रची जा रही है।'' यह कथन किस संदर्भ में कहा गया है तथा निर्मला उपन्यास की किस घटना की ओर संकेत करता है? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

कुछ विद्यार्थियों ने सन्दर्भ और घटना का चित्रण करने में गलती की तो कुछ ने पात्रों का नाम सही नहीं लिखे। कुछ ने उपन्यास का सारांश लिख दिया, और उत्तर को अनावश्यक विस्तार दिया।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

- अध्यापक बन्धुओं को चाहिए कि उपन्यास के प्रत्येक अध्याय का कक्षा में पुनः–पुनः वाचन करायें।
- पात्रों का नाम स्मरण करने का सुझाव दें।
- छात्रों को सन्दर्भ लिखने का अभ्यास करायें।
- परीक्षार्थियों को सुनिश्चित रूप से अवगत करायें कि उत्तर का अनावश्यक विस्तार नहीं करना चाहिए इससे श्रम और समय दानों की हानि होती है।
- उपन्यास में घटी मुख्य–मुख्य घटनाओं को रेखांकित कराएँ।

**अंक योजना**

**Question 7**

प्रस्तुत उपन्यास'निर्मला' उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द की एक उत्कृष्ट रचना है जिसमें उन्होंने समाज की कुरीतयों व विसंगतियों का चित्रण किया है। बाबू उदयभानुलाल इस उपन्यास के एक प्रमुख पात्र है। उन्होने अपनी बड़ी बेटी निर्मला का विवाह बाबू भालचन्द्र सिन्हा के ज्येष्ठ पुत्र भुवनमोहन सिन्हा से तय कर दिया है। बाबू उदयभानुलाल एक प्रतिष्ठित वकील हैं, यह सोचकर कि उदयभानुलाल ''विवाह में अपनी कन्या को अच्छा दहेज तो देंगे ही'' बाबू भालचन्द्र सिन्हा एकदम स्पष्ट रूप में दहेज की माँग नहीं करते।

बाबू उदयभानुलाल के घर में विवाह की तैयारियाँ जोरो से शुरू हो जाती हैं। उनका मकान बाजार बना हुआ है। उदयभनुलाल का मानना है कि ––

''बारातियों का ऐसा सत्कार किया जाए कि किसी को ज़बान हिलाने का मौका न मिले, वे लोग भी याद करें कि किसी के यहाँ बारात में गए थे''। बाबू उदयभानुलाल रोज़ रात को खर्चे का हिसाब लगाते और उसमें रोज ही

वृद्धि होती जाती। उनकी पत्नी कल्याणी को यह अच्छा न लगता, वह नाक भौं सिकोड़ती। जब बाबू साहब ने हिसाब लगाकर बताया कि ––''दस हजार से कम नहीं होता, बल्कि शायद और बढ़ जाए''। तो कल्याणी बोली ––''एक महीने में तो शायद एक लाख की नौबत आ जाए''।

बाबू उदयभानुलाल को समाज में अपनी मान मर्यादा का अधिक ध्यान है तभी तो वह कहते हैं ––''क्या करूँ, जगहँसाई भी तो अच्छी नही लगती। कोई शिकायत हुई तो लोग कहेंगे, नाम बड़े दर्शन छोटे''।

कल्याणी व्यावहारिक है, वह इस झूठे दिखावे में विश्वास नहीं करती। उसका मानना है –– ''जब से ब्रह्मा ने सृष्टि रची, तब से आज तक कभी'' बारातियों को कोई प्रसन्न नहीं रख सका। ........''मैं तो फिर यही कहूँगी कि बारातियों के नखरों का विचार ही छोड़ दो।''

वह बाबू साहब सें कहती है ––''घर में तो टका है नहीं, कर्ज ही का भरोसा ठहरा, तो इतना कर्ज़ क्यों लें कि ज़िदगी में अदा न हो। .........''

कल्याणी व उदयभानुलाल में इसी बात पर बहस छिड़ जाती है। उदयभानु मरने की बातें करने लगते हैं। लेकिन कल्याणी उनकी बातों को गम्भीरता से नहीं लेती, मरने की बात को सुनकर वह कहती है ––''मरना एक दिन सभी को है। कोई यहाँ अमर होकर थोड़े ही आया है।.......'' उदयभानु कहते हैं –– ''तो अब समझ लूँ कि मेरे मरने के दिन निकट आ गए, यही तुम्हारी भविष्यवाणी है।......'' दोनों की बहस भयंकर रूप लेती जाती है। कल्याणी घर छोड़ने की बात करने लगती है और गुस्से में बाहर निकल जाती है,

फिर वापस अपने बच्चों के पास आकर लेट जाती है। लेकिन बाबू साहब की आँखों में नींद नहीं है। वह यह सोचकर घर से निकल पड़ते हैं कि चार–पाँच दिन के लिए घर से बाहर चला जाऊँ तब तक इसका मिजाज ठण्डा हो जाएगा। यह सोचते हुए वह रेशमी चादर गले में डाले, कुछ रुपए लेकर चुपके से बाहर निकल जाते हैं। लेकिन विधाता को तो कुछ और ही मंजूर था। खेल–खेल में जो वह नाटक खेल रहे थे वह उनके जीवन में सत्य बन गया। शायद विधि ने उनके लिए यही रचा था। लेखक के शब्दों में ––

''पर यह कौन जानता था कि यह सारी लीला विधि के हाथों रची जा रही है।''बाबू उदयभानुलाल रात्रि में गंगा की ओर चले जा रहे थे। उन्होंने पाँच दिन के लिए मिर्जापुर जाने का निश्चय किया। उन्होंने सोचा अपना कुर्ता जिसमें उनका कार्ड था, घाट पर छोड़ देंगे जिससे लोगों को उनके गंगा में डूब जाने का विश्वास हो जाए। तब देखूँगा देवी जी मेरे मरने की खबर सुनकर क्या करती हैं। वह यही सोचते हुए गलियों में जा रहे थे कि मतई नाम का व्यक्ति, जिसे उन्होने कभी सजा दिलाई थी, उनका पीछा करने लगा। उसने बाबू साहब के सिर पर लाठी का प्रहार किया जिससे उनका सिर फट गया और खून की धार बह निकली जिससे उनका काम तमाम हो गया बाबू उदयभानुलाल मरने का नकली अभिनय करने चले थे लेकिन विधाता ने तो कुछ और ही रचा था। उनका अभिनय सत्य का रूप ग्रहण कर चुका था अर्थात् उनकी जीवन लीला समाप्त हो चुकी थी। लेखक के शब्दों में ––''यह कौन जानता था कि नकल असल होने जा रही है, अभिनय सत्य का रूप ग्रहण करने वाला है।''

**Question 8.**

निर्मला के आभूषण किसने और कैसे चुरा लिए? निर्मला ने पुलिस को इत्तिला देने से क्यों मना किया था? [12½] इस घटना का परिणाम क्या हुआ?

परीक्षकों की टिप्पणिया

कुछ परीक्षार्थियों ने भ्रम वश नाम लिखने में गलती की। निर्मला के आभूषण जियाराम ने चुराये थे परन्तु उसके स्थान पर सियाराम नाम लिखकर परिक्षार्थियों ने गलती की।
घटना का परिणाम क्या हुआ यह भी कुछ छात्रों ने स्पष्ट नहीं किया। कुछ छात्रों ने परिणाम में तोताराम के घर छोड़कर जाने की बात लिखी।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– अध्यापकगण उक्त त्रुटियों का समाधान कक्षा में मौलिक रूप से कर सकते हैं:– विषयवस्तु सम्बन्धित प्रश्न पूछ कर, सही उत्तर बताकर अथवा बोर्ड पर लिखकर परीक्षार्थियों का समाधान कर सकते हैं:
  (i) निर्मला के आभूषण जियाराम ने उसे सोती हुई समझकर रात में चुरा लिये। वह चुपके से उसके कक्ष में गया, उसे लगा कि निर्मला सो रही है अवसर अच्छा है अतः अपना उद्धेश्य (चोरी करने का) पूरा करके तत्काल निकल आया।
  (ii) निर्मला को यह पता था कि चोरी जियाराम ने ही की है भेद खुलने पर लेने के देने पड़ेंगे, परेशानी बढ़ेगी इसलिए पुलिस को इतिला देने से मना किया था।
  (iii)भेद खुलने पर जियाराम ने भयभीत होकर आत्महत्या कर ली।

**अंक योजना**

**Question 8**

निर्मला बहुत दिनों बाद अपने मायके से लौटती है तो बेटे जिया का व्यवहार देखकर दंग रह जाती है। वह मुँहजोर हो गया है, अपने पिता का भी लिहाज़ नहीं करता। वह सोने की कोशिश करती मगर नींद आँखों से कोसों दूर थी, तभी उसने लैम्प जलाया और पुस्तक पढ़ने लगी। चार पृष्ठ पढ़ते ही उसे झपकी आ गई।

सहसा जियाराम ने उसके कमरे में प्रवेश किया और चुपके से निर्मला के सिरहाने के ऊपर से पीतल का सन्दूकचा उतारा और तेजी से बाहर निकल गया। उसी वक्त निर्मला की आँखें खुल गई। वह चौंककर उठ खड़ी हुई। बाहर आकर देखा तो कलेजा धक् से रह गया, उसे विश्वास नहीं हुआ कि यह जियाराम है। वह सोचने लगी कि इतनी रात में वह यहाँ क्या करने आया होगा? शायद मेरी आँखों को धोखा हुआ है हो सकता है दीदी से कुछ कहने आया हो, लेकिन इस वक्त क्या कहने आया होगा? इसकी नीयत क्या है? उनके आशंकाओं से उसका दिल काँप उठा।

निर्मला अपने पति को इस घटना के बारे में बताना चाहती थी। लेकिन उनके शक्की स्वभाव के कारण कुछ न बता पाई कि न जाने क्या समझ बैठें और क्या कर बैठें? फिर उसने अपने मन को स्वयं ही शान्त किया कि हो सकता है उसकी आँखों को धोखा हो गया होगा। पर वह उस रात सो नहीं पाई।

निर्मला ने सुबह जिया से जाकर पूछा कि क्या रात को तुम मेरे कमरे में आए थे? पर वह साफ मुकर गया और बोला ––''मैं तो रात को थियेटर देखने चला गया था। वहाँ से लौटा तो मित्र के घर लेटा रहा। थोड़ी देर हुई लौटा हूँ..........। ऐसा न हो, कोई चीज गायब हो गई तो मेरा नाम लगे। चोर को तो कोई पकड़ नहीं सकता।

मेरे मत्थे आएगी।''निर्मला ने कहा ––''तुम्हारा नाम क्यों लगेगा?''

.....अपनी चीज की चोरी कोई नहीं करता। अभी तक निर्मला को पता नहीं था कि उसका सन्दूकचा चोरी हो गया है। वकील साहब के कचहरी चलेजाने पर उसने सुधा के यहाँ जाने का विचार किया। उसने भूंगी को बुलाकर कमरे से गहनों का बक्सा लाने को कहा, लेकिन वहाँ कोई बक्सा होता तो वह लाती। आखिर झल्लाकर निर्मला स्वयं बक्सा लाने चल दी, पर सब जगह ढूँढने पर भी बक्सा नहीं मिला। अन्त में रात वाली घटना से उसने तालमेल बैठाया तो दुःखी हो गई।

निर्मला के लिए तो यह गहने ही भविष्य की निधि थे। वह सोचती थी पाँच–छः हजार के गहने हैं उसको किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़ेगा। लेकिन उसे लगा, अब उसका अवलम्ब छिन गया, वह सिर नीचे करके रोने लगी।

जियाराम तीन बजे स्कूल से आया तो निर्मला ने उससे कहा कि यदि दिल्लगी करने के विचार से उसने उसका गहनों का बक्स लिया हो तो वापस कर दे, लेकिन वह साफ मुकर गया तथा गहने ढूँढने में उसकी मदद करने लगा। चार बजे मुंशीजी आए तो निर्मला की दशा देखकर पूछने लगे कि तबीयत तो ठीक है? पर निर्मला रोने लगी, उसने रोते–रोते रात की सारी घटना बता दी।

मुंशी जी इस घटना की रिपोर्ट पुलिस में करने की बात कहने लगे तो निर्मला ने यह कहकर मना कर दिया कि ''मिलने वाले होते तो जाते ही क्यों?''

मुंशी जी बोले ––''इतना बड़ा नुकसान उठाकर चुपचाप तो नहीं बैठा जाता'' पर निर्मला को आशंका थी अतः बोली ––''कहीं ऐसा न हो, लेने के देने पड़ जाएँ।''

लेकिन मुंशी जीतेजी से कमरे से निकलकर थाने जा पहुँचे और रिपोर्ट लिखवा दी। थानेदार ने शाम को घर के चारों ओर खोज शुरु कर दी और अन्त में बोला कि यह घर के ही किसी व्यक्ति का काम है। जियाराम के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी। भूंगी की बातों से उसे यकीन हो गया कि अब शक की सूई उसी पर केन्द्रित है, लेकिन उसे यह भी पता चल गया कि निर्मला तफ़तीश नहीं कराना चाहती।

जिया ने पाँच–छः दिन तक भर पेट भोजन नहीं किया। वह रोज चिन्तित रहता।

उसे पता चल गया था कि पूरे शहर में अफवाह है कि बेटे ने माल उड़ाया है। सब जगह बात फैल जाने से वह किसी को मुँह न दिखा सकेगा। मुंशी जी ने कचहरी से लौटकर बताया कि माल बरामद हो गया है, अब जिया का बचना मुश्किल है। शायद हजार, दो हजार की रिश्वत देने से मामला दब जाए। निर्मला ने रुपए दिए और थाने जाकर मुंशी जी ने अलायार खाँ को मामला दबाने के लिए राजी कर लिया।

आज जियाराम घर नहीं लौटा। सियाराम से पूछने पर पता चला कि वह रो रहा था। निर्मला ने उसे ढूँढने के लिए डॉक्टर साहब के घर जाने को कहा लेकिन घर से निकलते ही देखा बाहर डॉक्टर साहब खड़े थे। मुंशी जी के यह कहने पर कि जियाराम अभी तक घूमकर नहीं आया, डॉक्टर साहब ने मुंशी जी के दोनो हाथ पकड़ लिए और कहा ''भाई साहब, अब धैर्य से काम.....'' यह सुनकर मुंशी जी गोली खाए मनुष्य की भाँति जमीन पर गिर पड़े।

**Question 9.**

''निर्मला का अन्त करूणामय था'' – वर्णन करते हुए बताइए कि वह अन्त में किस तरह पाठकों की सहानुभूति समेटे संसार से विदा हो जाती है? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

(i) अधिकांश परीक्षार्थियों ने उत्तर को प्रश्नानुसार नहीं लिखा, केवल सारांश लिख दिया।

(ii) उत्तर लिखते समय उत्तर प्रस्तुति कैसे करनी है, विषयवस्तु उपयुक्त एवं सटीक है कि नहीं, यह ध्यान में नहीं रखा गया।

(iii)कुछ छात्रों द्वारा अनावश्यक विस्तार देने की चेष्टा की गयी।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– अध्यापकों को चाहिए कि वे परीक्षार्थियों को प्रश्नानुसार उत्तर लिखने का अभ्यास करायें। आदर्श उत्तर लिखाकर लिखने का तरीका सिखाएँ।

– अनावश्य विस्तार करते से समय और शक्ति का ह्रास होता है एवं अंक कट जाते हैं।

– पिता की असमय मृत्यु के कारण निर्मला तयसुदा विवाह टूट गया। दहेज के अभाव में विधवा माता कल्याणी ने तीन पुत्रों के पिता, अधेड़ उम्र के मुंशी तोताराम से सम्पन्न कर दिया। निर्मला ससुराल विमाता बनकर आयी जिसका वंश जीवनभर झेलती रही। इसके परिणाम स्वरूप घर का विघटन शरू हुआ। ननद रूक्मिणी की ईष्या, पति की शंकालु प्रकृति ने सब कुछ नष्ट कर दिया। मंसाराम की मृत्यु, घर की नीलामी, जियाराम की उद्धण्डता और आत्महत्या, सियाराम का पलायन, डा० भुवन मोहन सिन्हा आदि अनेक घटनाओं ने निर्मला को तोड़ दिया। पति ने सार समस्याओं की जड़ उसे ही माना। फलतः पति की बेरूखी ने उसे और आहत किया। वह ज्वरपीड़ित होकर चारपाई पर पड़ गयी और अन्ततो गत्वा मृत्यु को प्राप्त हो गई। अन्तिम समय में अपनी पुत्री के प्रति ननद से जो पीड़ा व्यक्त की वह करूणा भरी कहानी पाठकों को प्रभावित करती है उनकी सहानुभूति उसके प्रति सवतः हो जाती है।

अंक योजना

**Question 9**

हिन्दी के सर्वकालीन श्रेष्ठ उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द की अदभुत कृति 'निर्मला' एक ऐसा उपन्यास है जो यथार्थ के बहुत करीब है। 'निर्मला' उपन्यास की नायिका निर्मला एक भरे–पूरे परिवार में जन्म लेती है। उसका विवाह एक धनी परिवार में निश्चित हो गया था पर पिता की अचानक मृत्यु के कारण दहेज के लालची भेड़ियों ने उसकी नियति ही बदल दी और उसका विवाह एक विधुर से हो गया जो उसके पिता की उम्र का था। लगभग निर्मला की ही उम्र का उसका बड़ा बेटा था। साथ ही दो अन्य बेटों की विमाता उसे बनना पड़ा।

निर्मला के संघर्ष व दुःख की कहानी वहीं से आरम्भ हो जाती है जब उसका पति अपने बड़े पुत्र मंसाराम को लेकर पत्नी पर शक करने लगता है। मंसाराम के प्रति जागी ईर्ष्या व सन्देह ही मंसाराम की मृत्यु का कारण बन गए। मुंशी तोताराम पुत्र की मौत से लगभग टूट चुके थे अतः कचहरी में भी उनका मन न लगता। जहाँ अभी तक निर्मला को धन का अभाव न था वहीं अब उसे आर्थिक संकट से भी जूझना पड़ा। मंसाराम की मृत्यु के लिए मँझले पुत्र जियाराम ने पिता को दोषी ठहराया। आए दिन पिता–पुत्र में बहस होने लगी व दूरियाँ बढती गई। एक दिन जियाराम ने मित्रों के कहनेमें आकर अपनी विमाता के गहनों का बक्स चुरा लिया तथा मित्रों ने उसे बेच दिया। बाद में चोरी पकड़े जाने कें डर से वह घर से चला गया और उसने मृत्यु को गले लगा लिया।

मुंशी जी को जब पता चला कि निर्मला को जियाराम के गहने चोरी करने वाली बात मालूम थी पर उसने छिपाया तो उन्होने निर्मला को कुछ कटु शब्द कहे, जिससे निर्मला आहत हुई और बोली कि अगर बता देती तो कहते ''लांछन लगा रही है। नहीं कहा तो मैं ही दोषी।''

निर्मला का कोमल, मधुर स्वभाव धीरे–धीरे कर्कश होता चला गया जिसका कारण आर्थिक अधिक था। उसे अपनी बेटी के भविष्य की चिन्ता सताने लगी। वह कंजूसी से घर चलाती। सियाराम से सामान मँगवाती लेकिन कई–कई बार सामान वापस लौटाने की आदत से वह भी परेशान होकर घर से भाग गया।

मुंशी जी को जब पता चला कि सियाराम के घर से जाने के लिए निर्मला ही दोषी है तो उन्हीने उसे कटु वचन कहे। तीन दिन तक बिना कुछ खाए वह सिया को ढूँढते रहे, अन्त में स्वयं भी घर छोड़कर चल दिए।

निर्मला के सुख–दुःख की साथी थी डॉक्टर की पत्नी सुधा, लेकिन दुःख की परछाइयों ने यहाँ भी उसका पीछा न छोड़ा। वह सुधा के पास बैठकर अपना मन हल्का कर लेती थी लेकिन एक दिन जब सुधा घर पर नहीं थी और निर्मला उसके कमरे में थी, तभी डॉक्टर साहब ने उसके प्रति अपना प्रेम प्रकट किया जिससे आहत होकर वह घर आकर रोती रही। निर्मला से पति के इस प्रकार का व्यवहार का संकेत पाकर सुधा ने क्रोध में पति को उल्टा–सीधा सुना दिया जिससे ग्लानिवश उन्होने आत्महत्या कर ली। दुखियारी निर्मला पर एक और वज्रपात हो गया और वह स्वयं को उनकी हत्या के लिए दोषी ठहराने लगी। उनकी मृत्यु के बाद निर्मला बिल्कुल अकेली पड़ गई क्योंकि सुधा को उसका देवर तथा देवरानी अपने साथ ले गए।

सुधा के चले जाने से निर्मला का हँसना–बोलना भी बन्द हो गया। अब केवल रोना ही उसका काम रह गया था। उसका स्वास्थ्य बिगड़ता गया। पुराने मकान का किराया अधिक था, कम किराए में छोटा सा कमरा लिया जहाँ न प्रकाश आता, न वायु, दुर्गन्ध ही दुर्गन्ध। आज निर्मला की दशा अत्यन्त दयनीय हो गई थी। कई–कई बार तो भूखे ही रहना पड़ता था। पैसा होते हुए भी उसे उपवास करना पड़ता, क्योंकि बाजार से सामान लाने वाला कोई नहीं था। बेटी के लिए हलुआ या रोटियाँ बन जाती थी। ऐसी दशा में वह दिन पर दिन सूखती चली जा रही थी। दैहिक, दैविक व भङ्गङेङ्गतक तीनों प्रकार पे तापों ने उसे घेर लिया था। धन की बचत करने के लिए उसने दवा न खाने की कसम खा ली थी और वह धीरे–धीरे घुलती चली गई। जब रुक्मिणी ने कहा –– ''बहू, इस तरह कब तक घुला करोगी, .......चलो किसी वैद्य को दिखा लाऊँ'', तो वह विरक्त भाव से बोली –– ''जिसे रोने ही के लिए जीना हो, उसका मर जाना ही अच्छा।''

रुक्मिणी कहती है ''बुलाने से तो मौत भी नहीं आती।'' तब निर्मला उत्तर देती है –– ''मौत तो बिना बुलाए आती है, बुलाने से क्यों न आएगी?'' उसे संसार से कोई लगाव नहीं रह गया था। वह कहती है ––''अगर संसार

का यही सच्च है, जो इतने दिनों से देख रही हूँ, तो उससे जी भर गया।'' उसका यह कथन ही पाठको को भीतर तक द्रवित कर देता है। अपनी बच्ची की चिन्ता में वह रुक्मिणी से कहती है –– ''अगर जीती–जागती रही तो किसी अच्छे कुल में विवाह कर दीजिएगा,..............चाहे विष देकर मार डालिएगा, पर कुपात्र के गले न मढ़िएगा।

वह अपने को अभागिनी कहकर कोसती है –– ''जिस पर मेरी छाया भी पड़ गई उसका सर्वनाश हो गया।''

अन्त में वह करुणा की पात्र कातर दृष्टि से देखते हुए कहती है –– ''स्वामी जी मुझे हमेशा अविश्वास की दृष्टि से देखा, लेकिन मैंने कभी मन में भी उनकी उपेक्षा नहीं की।''

तीन दिन तक निर्मला की आँखों से आँसुओं की धारा बहती रही, वह न किसी से बोलती, न कहती, न सुनती, बस रोए चली जाती थी। चौथे दिन उसकी विपत्ति–कथा समाप्त हो गई। अपने भाग्य में जीवन भर दु:ख लिखकर आई निर्मला अन्त में भी पाठको की सहानुभूति बटोर ले जाती है। उसका ऐसा कारुणिक अन्त रोंगटे खड़े कर देता है।

अन्त में उसके मोहल्ले के लोग जमा हो गए। लाश बाहर निकाली गई। दाह–संस्कार का प्रश्न उठ रहा था और लोग इसी चिन्ता में थे कि एक बूढ़ा पथिक एक बकुचा लटकाए आकर खड़ा हो गया, यह मुंशी तोताराम थे।

एक करुण पात्र की करुण गाथा का अन्त हो गया, जो पाठको को भीतर तक रुला गया।

## कथा सुरभि

**Question 10.**

''कुछ खाया नहीं। इतने अमीर के यहाँ रहता है और दिन भर तुझे कुछ खाने को नहीं मिला?'' मधुआ के कष्टों का वर्णन करते हुए बताइए कि उसके जीवन के कष्टों का निवारण कैसे हुआ। [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

बहुत से परीक्षार्थियों ने कहानी का सारांश लिख दिया। उत्तर प्रश्न के अनुसार नहीं लिखा। इसके अतिरिक्त वर्तनी और मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी देखी गई।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

- कथित अशुद्धियों, गलतियों को सुधारने के लिए अध्यापकों को कक्षा में कहानी को अच्छी तरह से पढ़वाना चाहिए। इसके साथ ही साथ कठिन शब्दों और कठिन अंशों की यथायोग्य व्याख्या करनी चाहिए, विस्तार से समझाना चाहिए। कहानी से मिलने वाली शिक्षा तथा उद्धेश्य पर प्रकाश डालना चाहिए।
- वर्ण, बिन्दु, मात्रा और वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करने के लिए लेखन कार्य अधिक कराना चाहिए।
- उत्तर प्रश्नानुसार लिखने का अभ्यास कराना चाहिए।

अंक योजना

**Question 10**

श्री जयशंकर प्रसाद की कहानी 'मधुआ'एक सामाजिक समस्या पर आधारित है। प्रस्तुत कहानी में धनिक–वर्ग द्वारा निर्धन बच्चों के शोषण – बचपन की उपेक्षा – को आधार बनाया गया है। मधुआ समाज का एक उपेक्षित पात्र है जिसका जीवन कष्टों से भरा है। मधुआ को कहानी में हम उस समय देखते हैं जब ठाकुर सरदार सिंह शराबी से कहानी सुनने के बाद सोने के लिए जाते हैं और शराबी से कहते हैं––''अच्छा जाओ, मुझे नींद लग रही है। वह देखों, एक रुपया पड़ा है, उठा लो। लल्लू को भेजते जाओ।''

शराबी लल्लू को खोजता हुआ फाटक की बगलवाली कोठरी के पास पहुँचता है तो उसे एक बालक के रोने की आवाज आती है। लल्लू बालक के साथ निर्दयता से पेश आ रहा था। वह कर्कश आवाज में कहता है ––''कुँवर साहब ने दो लातें लगाई हैं। गोली तो नहीं मार दी?

उसके इस कथन से पता चलता है कि बालक किसी की क्रूरता का शिकार हुआ है। लल्लू उसे प्यार व स्नेह के दो बोल तो बोल नहीं सका। ऊपर से और भी कठोरता से कहता है ––

''मधुआ!जा सो रह! नखरा न कर, नही तो उठूँगा तो खाल उधेड़ दूँगा! समझा न?'' फिर 'शराबी ने सुना, लल्लू कह रहा था––

''ले अब भागता है कि नहीं? क्यों मार खाने पर तुला है?''

बालक भयभीत होकर बाहर चला आ रहा था। वह रो रहा था। शराबी को उस पर दया आई। उसने बड़े प्यार से उसका मुँह पोंछा और अपने साथ ले आया। उसने बालक से रोने का कारण पूछा कि ''अब क्यों रोता है रे छोकरे?'' बालक ने कहा ––

''मैनें दिन–भर से कुछ खाया नहीं।'' तब शराबी उससे प्रश्न करता है ––

''इतने बड़े अमीर के यहाँ रहता है और दिन–भर तुझे कुछ खाने को नहीं मिला?''बालक शराबी को बताता है कि वह अपनी भूख लगने की बात कहने ही जमादार के पास गया था कि ''मार तो रोज ही खाता हूँ। आज तो खाना ही नहीं मिला।''

बालक मधुआ के इस कथन में समाज के तथाकथित बड़े तथा सम्पन्न कहे जाने वाले लोगों की ओर संकेत है जो अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए गरीब व असहाय बच्चों को बँधुआ बना लेते हैं, उन पर अत्याचार करते हैं, उन्हें भरपेट भोजन तक नहीं देते। कुँअर साहब मधुआ को दिन भर अपने साथ रखते हैं, अपने काम करवाते हैं। आज भी कुँअर साहब खेल में व्यस्त थे और मधुआ उनका ओवरकोट थामे रहा। शाम सात बजे लौटा। फिर नौ बजे तक काम किया लेकिन उन्होंने उसे भोजन के लिए भी नहीं पूछा।

उसके पास आज आटा भी नहीं था तो रोटी कैसे बनाता। यही बात कहने वह जमादार के पास गया था। जमादार ने उसकी सहायता करने के बदले उसको गालियाँ, झिड़कियाँ व मार का उपहार दिया। यही नियति है हमारे समाज में निम्नवर्ग की, जो निर्धनता के कारण पिसता चला जाता है उसको ऊपर उठाने का प्रयास कोई नहीं करता, और न उनकी शिक्षा का ही ध्यान रखा जाता है। ये मासूम, भोले–भाले निर्धन बच्चे भूखे पेट खुले आकाश के नीचे पड़े–पड़े एक दिन फुटपाथ पर ही मृत्यु की भेंट चढ़ जाते हैं।

मधुआ हमारे समाज का एक बहुत ही निर्धन, अशिक्षित व उपेक्षित बालक है। वह दिन–भर काम करता है, भोजन के बदले उसे मार मिलती है शराबी के दो स्नेह के बोलों ने उसे चुप कर दिया। वह चुपचाप उसके पीछे चला आता है। बालक भोजन पाते ही मुस्करा उठता हैं। बालक को सोता हुआ देखकर शराबी का हृदय भी पसीज जाता है। वह मन ही मन प्रश्न करता है ––

''किसने ऐसे सुकुमार फूलों को कष्ट देने के लिए निर्दयता की सृष्टि की''

उस छोटे से बालक ने शराबी का दिल जीत लिया। वह शराब के बदले भी भोजन लेकर आता है। शराबी उससे

कहता है ––''ले उठ, कुछ खा ले, अभी रात का बचा हुआ है, और अपनी राह देख! ................''तब बालक कहता है कि वह कहाँ जाएगा। उसका कोई घर नहीं है। अन्त में शराबी ने बालक की समस्या को दूर कर दिया। उसे अपनी मशीन मिल गई तथा फिर साथ देने का निश्चयकरके मधुआ से पूछा ––

''क्यों रे मधुआ, अब तू कहाँ जाएगा?''

''कहीं नहीं।''

''फिर क्या यहाँ जमा गड़ी है कि मैं खोद–खोद कर तुझे मिठाई खिलाता रहूँगा?''

तब वह कोई काम करने का निश्चय करते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि शराबी और मधुआ एक दूसरे के पूरक है। शराबी के जीवन में मधुआ एक नई जिंदगी लेकर आता है और उसका जीवन परिवर्तित हो जाता है। मधुआ को भी जीने का सहारा मिल जाता है। शराबी से उसे आश्रय तो मिलता ही है साथ ही एक संरक्षक भी मिल जाता है जिससे उसके जीवन के सब कष्टों का निवारण हो जाता है।

**Question 11.**

''उफ़, ईश्वर की महिमा बड़ी विचित्र है। जिनके लिए तुमने न जाने कहाँ–कहाँ की ठोकरें खाईं, अन्त को इस प्रकार मिले।'' प्रस्तुत कथन के आधार पर सिद्ध कीजिए कि रक्षाबन्धन कहानी एक घटना प्रधान कहानी है। [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

यह कहानी घटना प्रधान है, इसका तर्कपूर्ण उत्तर न देकर बहुत से छात्रों द्वारा कहानी का सारांश मात्र लिखा गया। कुछ परीक्षार्थिगण पात्रों के सही नाम नहीं लिख सके।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– अध्यापकों की यथाशक्ति चेष्टा से परीक्षार्थियों का सम्यक् मार्गदर्शन किया जा सकता है।
– कहानी की घटनाओं का विवरण देकर समझाऐं कि यह कहानी मानवीय रक्त सम्बन्धों को उकेरनेवाली सामाजिक कहानी है।

**अंक योजना**

**Question 11**

विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक की कहानी रक्षाबन्धन मानवीय सम्बन्धों को उकेरने वाली एक सामाजिक कहानी है। इसमें लेखक ने रक्षा–बन्धन की पौराणिकता से सम्बन्धित कुछ भी नहीं कहा है बल्कि सामाजिक सम्बन्धों की प्रगाढ़ता और उनके अस्तित्व को महत्त्व दिया है। लेखक ने घनश्याम के सरस्वती नाम की एक अपरिचित बालिका से राखी बँधवाई है और घनश्याम उस सम्बन्ध को याद रखता है। यह रक्त सम्बन्ध के कारण नहीं अपितु इसका आधार मन की भावनाएँ हैं।

प्रस्तुत कहानी एक घटना–प्रधान कहानी है। इसे भी हम एक संयोग ही कहेंगे कि एक अबोध दसवर्षीय बालिका राखी का डोरा लेकर द्वार पर खड़ी है। क्योंकि उसे पता चलता है कि राखी केवल भाई को ही बाँधी जाती है और उसके कोई भाई नहीं है। वह कहती है ––

''राखी नहीं बाँधूँगी तो तिवहार काहे का वह द्वार पर खड़ी आने–जाने वालों को बड़ी उत्सुकता से देख रही है। वह निराश होकर घर के भीतर जाने को थी कि एक युवक की दृष्टि उस पर पड़ी। उसने बालिका से पूछा ––

''बेटी, रोती क्यों हो?''

बालिका ने कोई उत्तर न दिया। लेकिन बालिका ने अपना एक हाथ युवक की ओर बड़ा दिया। उस हाथ में लाल डोरा था। युवक समझ गया 'उसने तुरन्त वह डोरा बँधवा लिया। बालिका का मुख कमल खिल उठा। घनश्याम ने उसे दो रुपए देने चाहे। वह बोली ––''नहीं, पैसे दो।'' और घनश्याम ने पैसे और रुपये दोनों बालिका के हाथ में रख दिए। इतने में भीतर से माँ ने पुकारा और सरस्वती चली गई।

यह घटना पाँच वर्ष बाद भी घनश्याम के अन्तर्मन में स्थित है। लेखक कहते हैं ––

''पूर्वोक्त घटना हुए पाँच वर्ष व्यतीत हो गए। घनश्यामदास पिछली बातें प्रायः भूल गए हैं। परन्तु उस बालिका की याद कभी–कभी आ जाती है।''

घनश्याम उस बालिका को देखने कानपुर भी गया। पता चला कि कुछ समय पहले वह अपनी माता के साथ कहीं चली गई है।

घनश्याम के जीवन मे उसी बालिका से सम्बन्धित एक घटना फिर घटती है। वह अभी तक अविवाहित है। मित्रों के कहने पर वह विवाह करने को तैयार हो जाता है। घनश्याम और अमरनाथ लड़की देखने आते हैं।

घनश्याम मकान देखकर कहता है ––

''मकान देखने से तो बड़े गरीब जान पड़ते हैं।'' एक स्त्री द्वार खोलती है। वह दीया जलाकर घनश्याम का चेहरा देखती है तो एक हृदयबेधी आह उसके मुख से निकलती है और वह बेहोश हो जाती है। तभी रोशनी में घनश्याम उस स्त्री का चेहरा देखता है तो उसके मुँह से निकलता है। ''मेरी माता ––''और उठकर भूमि पर बैठ जाता है। यह भी एक संयोग ही है। जिस माँ को वह वर्षो ढूँढ़ रहा था, आज वह उसे इन परिस्थितियों में मिली।''

अमरनाथ कहता है ––''उफ़, ईश्वर की महिमा भी बड़ी विचित्र है। जिनके लिए तुमने न जाने कहाँ की ठोकरे खाई, अन्त को इस प्रकार मिले। ''घनश्याम पानी मँगाता है। भीतर से एक लड़की लोटा लेकर आई, माँ का मुँह धुलते ही उसे होश आ गया। वह घनश्याम को देखकर बोली ––

''ऐ, मैं क्या स्वप्न देख रही हूँ, घनश्याम! क्या तू मेरा खोया हुआ घनश्याम? या कोई और?'' और माँ उसे छाती से लगा लेती है।

लड़की ने जब यह सब देखा–सुना तो भैया–भैया कहकर धनश्याम से लिपट गई घनश्याम ने देखा कि लड़की और कोई नही, वही बालिका है जिसने पाँच वर्ष पूर्व उसको राखी बाँधी थी और जिसकी याद प्रायः उसे आया करती थी।

**Question 12.**

पाठ के आधार पर घीसा के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए। [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

अधिकांश परीक्षार्थियों ने घीसा की चारित्रिक विशेषताएँ कहानी का सारांश लिखकर बताने का प्रयास किया, बिन्दुवार उपयुक्त उदाहरण देकर स्पष्ट नहीं किया।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– परीक्षार्थियों का मार्गदर्शन करने के लिए कहानी को अच्छी तरह पढ़ाकर उसके उद्धेश्य पर प्रकाश डालना चाहिए और कहानी से मिली शिक्षा को समझाना चाहिए।

**अंक योजना**

**Question 12**

घीसा की चारित्रिक विशेषताएँ निम्न बिन्दुओं के आधार पर दर्शनीम हैं ——

**सामान्य परिचय**

घीसा नौ वर्ष का सहज और सरल बालक है। गरीब वधिवा माँ का एक मात्र पुत्र। झूँसी की रविवासरीय पाठशाला में लेखिका सुश्री महादेवीवर्मा से पढ़ने आनेवाला अनुशासित विद्यार्थी।

''पक्का रंग, पर गठन में विशेष सुडौल, मलिन मुख, जिसमें दो निरन्तर सतेज पर पीली आँखें, कसकर बन्द किये हुए पतले होठों की दृढ़ता, सिर पर खड़े छोटे छोटे रूखे बालों की उग्रता का मुख की संकोचमयी कोमलता से विद्रोह। उभरी हड्डियों— वाली गर्दन, झुके कन्धे, रक्तहीन मट—मैली हथेली, टेढ़े—मेढ़े कटे नाखून वाली पतली बाहें, दौड़ने के कारण दुबले पैर ही विशेष पुष्ट जान पड़ते थे।

**ज्ञान पिपासु**

घीसा की पढ़ने में लगन थी। पाठशाला का सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी लगन से पाठ पढ़ना—सुनना, पुस्तक व स्लेट स्वच्छ रखना पाठ अच्छी तरह याद करना आदि।

**पाठशाा की साफ साफाई आदि की व्यवस्था करने वाला**

पाठशाला लगने के स्थान को झाड़ना, साफ करना लीपना, गुरूजी के आने की सूचना देना, शीतल पारी बिछाना कलम दावात यथा स्थान रखना आदि।

**आज्ञापालन**

शिक्षक/गुरू के आदेश को मानने वाला घीसा एकलव्य के समान है। गुरू जो कुछ कहते हैं उसका अक्षरशः पालन करना है।

**न्याय बुद्धि एवं ममत्वः**

घीसा छीना झपटी करना ठीक नहीं समझता। गुरूजी से मिली पाँच जलेबी पाकर — दो माँके लिए, दो स्वयं के लिए और एक पाले हुए पिल्ले के लिए रखता है। गुरू से पुनः लेने का आग्रह करने पर न्याय पूर्वक एक ही जलेबी चाहता है क्योंकि पिल्ले को केवल एक ही मिली थी आदि।

**गुरूजी के प्रति ममता और कुशलता की चिन्ता**

दो सप्ताह का ज्वर होने पर भी घीसा दौड़ता हुआ किसी तरह गुरूजी के पास गया और हिन्दू—मुस्लिम दंगे की सूचना दी। सुरक्षा की दृष्टि से न जाने का आग्रह आदि।।

**गुरूदक्षिणा देने की इच्छा**

घीसा ने अपने गुरूजी (महादेवी वर्मा) के लम्बे समय के लिए जाने की बात सुनकर उन्हें गुरूदक्षिणा देना चाहा। अपना कुर्ता देकर किसान के बेटे से तरबूज लिया और गुरूजी से गुरूदक्षिणा स्वीकार करने का हठ किया आदि।

**निष्कर्ष**

घीसा में गुरूजी के प्रति अपार श्रद्धा गुरूभक्ति, पढ़ने में लगना खने वाला, परिश्रमी आदि चारित्रिक विशेषताएँ।

# ज्वालामुखी के फूल

## Question 13.

पर्वत कौन था? उसका परिचय देते हुए उपन्यास के कथानक में उसका स्थान निश्चित करते हुए लिखिए कि चाणक्य को उसे मार्ग से हटाने के लिए क्या षड्यन्त्र रचना पड़ा और क्यों? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

कतिपय परीक्षार्थियों ने पर्वतक का सभ्यक् परिचय नहीं दिया, उपन्यास के कथानक में उसका स्थान भी स्पष्ट नहीं किया। कुछ छात्रों ने यह स्पष्ट नहीं किया कि चाणक्य ने षडयन्त्र की रचना क्यों की।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– अध्याय के महत्त्व पूर्ण पात्र और घटनाओं का स्मरण करने का निर्देश छात्रों को देना चाहिए।

**अंक योजना**

**Question 13**

पर्वतक सीमान्त प्रान्त पंच नद प्रदेश का एक शक्तिशाली राजा था। उसका पुत्र मलयकेतु (युवराज) बड़ा चतुर और कुशल योद्धा था। प्रस्तुत उपन्यास के कथानक में पर्वतक का स्थान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। आचार्य चाणक्य की सूझ–बूझ से उसके साथ चन्द्रगुप्त की सन्धि एवं मित्रता हुई जिसके अनुसार पर्वतक ने चन्द्रगुप्त को मगध के विरूद्ध संघर्ष और आक्रमण में पूरा सहयोग करने का वचन दिया। आचार्य चाणक्य के निर्देशानुसार चन्द्रगुप्त और पर्वतक की मौखिक सन्धि हो गयी। चन्द्रगुप्त का मगध का सम्राट बनने में पर्वतक का पूर्ण सहयोग मिला।

मगध के पूर्व सम्राट सर्वार्थ सिद्धि की हत्या के बाद महामात्य राक्षस टूट गये। चन्द्रगुप्त मौर्य को विजय मिली। मगध के नये सम्राट के रूप में चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्याभिषेक होने वाला था उसकी पूर्व सन्ध्या पर पर्वतक पुत्र युवराज मलय केतु ने अवसर खोज कर याद दिलाया कि सम्राट चन्द्रगुप्त ने उसे आधा राज्य देने का वचन दिया था उसे पूर्ण करने का समय आ गया है। उसका आशय यह था कि मौखिक सन्धि में लिए गये निर्णय का अनुपालन किया जाना चाहिए।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने उसका आशय समझकर उत्तर दिया कि तुम्हारे जैसे मित्रों के प्रभाव से यह सब सम्भव हुआ है, मलय! पर अभी तो मैं मगध का राजा हुआ ही नहीं। मलय केतु ने साश्चर्य कहा कि अब कौन सी बाधा रह गयी है? बाधा न सही, पर जब तक राज्याभिषेक न हो जाय, जब तक मेरे हाथों में मगध का राज दण्ड न आ जाय और जब तक अन्य शासक मुझे मगध का राजा न मान लें, तब तक तो इस राज्य के अधिकारी महामात्य राक्षस ही हैं। चाहो तो भगवान कौटिल्य से पूछकर देखे मलय!

आचार्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के ही कथान को उचित ठहराया व जब तक राजा के हाथ में राज दण्ड, मस्तक पर राज मुकुट न हो तब तक किस पर और कैसा अधिकार? मगध में चन्द्रगुप्त का शासन चल भी कैसे सकता है?

मलयकेतु ने कहा कि शासन सेना के बल पर चलेगा आचार्य! नहीं चाणक्य ने सिर हिला दिया, उग्रसेन नन्द की विशाल सेना भी उनका शासन नहीं चला सकी। इस कारण कि चतुरगिणी वाहिनी कभी प्रजा के मन में राजा के लिए आस्था और नेह नहीं उपजा सकती। मलयकेतु चुप हो गया। उसी समय चन्द्रगुप्त ने आज्ञा दी कि कल राज्याभिषेक के अवसर पर महाराज पर्वतक राजकुमार भद्रभट आदि सभी को आमन्त्रित किया जाय, तदनुसार अग्रेतर कार्यक्रम को सुचारू रूप दिया गया।

परन्तु आचार्य चाणक्य के मन में मलयकेतु की बात घर कर गयी क्योंकि महाराज पर्वतक और युवराज

मलयकेतु की ओर से आधाराज्य बाँटने की माँग एक आध बार और आ चुकी थी किन्तु चाणक्य ने बड़ी चतुराई से टाल दिया था। अब चाणक्य के लिए पर्वतक की समस्या का समाधान करना अनिवार्य हो गया था क्योंकि महामात्य राक्षस ने पर्वतक से मिलकर उनके मन्त्रियों को विश्वास दिलाया कि चन्द्रगुप्त और चाणक्य उसे आधाराज्य कभी नहीं देगें। यदि वह महामात्य राक्षस की सहायता करें तो निश्चय ही मगध का पूरा राज्य मिल सकता है।

महाराज पर्वतक और महामात्य राक्षस मिलकर चन्द्रगुप्त और चाणक्य के विरूद्ध षडयनत्र रचने लगे थे इसलिए आचार्य चाणक्य ने महामात्य राक्षस के ही षडयन्त्र को पलटकर उसी के शस्त्र से विषकन्या द्वारा निष्कण्टक कर दिया। एक तरफ पर्वतक की सेना में यह समाचार फैलाया गया कि कौटिल्य ने आधाराज्य बचाने के लोभ से स्वयं विषकन्या भेजकर पर्वतक की हत्या करा दी। वह मित्र घाती है, परिणामतः मित्र राजाओं पर आतंक छा गया वे मगध से पलायन करने लगे।

दूसरी ओर सारे मगध में प्रचार किया गया कि राक्षस ने विषकन्या भेजकर महाराज पर्वतक की हत्या करा दी और अब मौर्य सम्राट की हत्या का प्रयत्न कर रहा है। इसके परिणाम स्वरूप प्रजा का बड़ा भाग राक्षस से घृणा करने लगा।

इस प्रकार चाणक्य ने पर्वतक को रास्ते से हटाने के लिए उपर्युक्त षडयन्त्र का सहारा लिया।

**Question 14.**

उपन्यास के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि योग्य राजनीतिज्ञ में क्या गुण होते हैं? क्या आमात्य राक्षस में वे सभी गुण थे? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

बहुत कम परीक्षार्थियों ने इस प्रश्न का सम्यक् और सम्पूर्ण उत्तर दिया। अधिकांश ने आमात्य राक्षस की सामान्य विशेषताएँ बताकर उत्तर का उपसंहार कर दिया।

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

– अध्यापक बन्धुओं को चाहिए कि वे परीक्षार्थियों को प्रश्न के प्रत्येक भाग का अलग–अलग स्पष्ट वर्णन अथवा विवरण प्रस्तुत करने हेतु प्रेरित करें।

– योग्य राजनीतिज्ञ में दूर–दर्शिता, गम्भीरता, देशभक्ति, प्रजावत्सलता, कुशाग्रता, समय की आहट लेने की क्षमता, कर्त्तव्य निष्ठता, तीक्ष्ण दृष्टि, अलोभ, अदम्य साहस, आत्मबल उदारता आदि गुण होने चाहिए, इसका बोध कराएँ। आमात्य राक्षस में उपर्युक्त गुण किस सीमा तक थे तर्क पूर्ण ढ़ंग से स्पष्ट करके समझाएँ।

**अंक योजना**

**Question 14**

एक योग्य राजनीतिज्ञ दूरदर्शी, गम्भीर, देश तथा प्रजा का हित चाहने वाला, समय की गति जानकर तदनुकूल आचरण करने वाला, कर्त्तव्य परायण, तीक्ष्ण दृष्टि रखने वाला तथा लोभ से परे होता है। महामात्य राक्षस में उपर्युक्त सभी गुण विद्यामान थे। प्रस्तुत उपन्यास के आधार पर महामात्य राक्षस का मूल्यांकन निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट है–

उपन्यास के प्रारम्भ में ही आमात्य राक्षस की दूरदर्शिता का परिचय मिलता है। मगध जैसे विशाल साम्राज्य के निर्माण में आर्य शकटार और आमात्य राक्षस का बहुत बड़ा योगदान था। किन्तु जब आर्य शकटार जैसे महान एवं योग्यतम व्यक्ति को कारागार में डाल दिया गया तब सारी मन्त्रिपरिषद आंदोलित हो गयी, परन्तु आर्य राक्षस गम्भीर एवं मौन मुद्रा में अपलक दीवार की ओर ताकते रहे मानों उसपर अंकित भविष्य का कोई लेख पढ़ रहे हो। और थोड़ी देर तक सबकी बातें और उनके सामूहिक निर्णय को जानकर महामात्य राक्षस ने गम्भीर होकर कहा कि हमने अपने खून से इस देश को सँवारा है, यहाँ खून की नदी बहाने की अनुमति मैं कभी किसी को नहीं दूंगा। और आदेश देते हुए कहा कि मैं जानता हूँ कि सम्राट की विकराल सेना इस विद्रोह को क्षणभर में कुचल देगी। इसलिए मन्त्रि परिषद से अनुरोध करता हूँ कि वह समय का साथ दें। हम यहाँ प्रजा के हित के लिए हैं हानि के लिए नहीं। सम्राट नन्द ने जो कुछ किया है प्रजा के हित के लिए किया है इसके विरूद्ध बोलने वाला राजद्रोही, कठोरतम दण्ड का भागी होगा।

सम्राट द्वारा आर्य शकटार का कारागार से मुक्त कर मन्त्रि परिषद में पुनः आमात्य पद देने पर आर्य राक्षस ने स्पष्ट शब्दों में निर्णय का विरोध करते हुए कहा कि उन्हें राज परिषद में पद देना नियमानुसार उचित नहीं होगा महाप्रभु! आर्य राक्षस ने यथासमय कालोचित आलोचना करके अपना कर्त्तव्य पूरा किया, साथ ही शकटार की वस्तुस्थिति जानकर उनपर कड़ी नज़र रखने में कदाचित चूक नहीं की। विचक्षणा दासी ने महाराज के कोप से बचने के लिए क्या क्या किया था। इस रहस्य को जानकर उसे ही आर्य शकटार की गुप्तचरी करने का आदेश दिया जिससे उनकी गतिविधियों की जानकारी मिल सके।

जब आचार्य चाणक्य किशोर चन्द्रगुप्त को अपने साथ लेकर गये और इसकी सूचना महामात्य राक्षस को मिली तो उनहोंने एक कुशल राजनीतिज्ञ की तरह परिस्थितियों का आकलन करके आर्य शकटार को सम्राट के सामने असत्य बोलने की सलाह दी क्योंकि इसी में आर्य शकटार और देवी मुरा का हित छिपा था।

सामान्यतया राजा की मृत्यु के बाद महामात्य की निष्ठा बदल जाती है पर आर्य राक्षस महाराज की मृत्यु का बदला लेने हेतु कटिबद्ध हैं इसीलिए उन्होंने राजगद्धी पर स्वार्थ सिद्धि को बैठाकर अपनी राजनीतिक कुशलता का परिचय दिया और गुप्तचरों से यह सूचना पाकर कि आचार्य चाणक्य का महत्त्वाकांशी शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य सीमान्त प्रान्त के शक्तिशाली पर्वतक और अन्य मित्र राजाओं के साथ मिलकर मगध पर आक्रमण करना चाहता है, तुरन्त सजग होकर उपाय सुनिश्चित किया और घटना का, आक्रमण का प्रतिरोध अपने नेतृत्व में किया। शत्रु की चाल को सफल होने नहीं दिया परन्तु दुर्भाग्य वश सम्राट सर्वार्थ सिद्धि राजभवन छोड़कर पलायन कर गये और कालान्तर में उनकी हत्या कर दी गयी। आमात्य राक्षस ने फिर भी साहस नहीं छोड़ा, परिस्थितियों का सामना किया। आमात्य राक्षस ने चन्द्रगुप्त के मित्र राजा पर्वतक को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया परन्तु चाणक्य की कूटनीति के चलते वह सफल नहीं हुआ। पर्वतक की हत्या कर दी गयी। चन्द्रगुप्त को विजय मिली राज्याभिषेक के उपरान्त सम्राट चन्द्र गुप्त ने महामात्य राक्षस को ही अपना मन्त्री बनाया इससे स्पष्ट है कि महामात्य राक्षस में एक कुशल राजनेतिज्ञ के सभी गुण विद्यमान थे। सम्राट चन्द्रगुप्त का कथन इस सन्दर्भ में दर्शनीय है –''हीरा राजा के पास भी रहता है और लम्पट नीच चोर के पास भी। वह जहाँ भी रहता है उसी का बनकर रहता है। उसमें उसका मूल्य घट तो नहीं जाता आर्य!''

**Question 15.**

'ज्वालामुखी के फूल' उपन्यास के आधार पर विचक्षणा का परिचय देकर स्पष्ट कीजिए कि वह सम्राट महापद्मनंद के क्रोध का कारण क्यों बनी तथा क्रोध से उसे छुटकारा कब और किसकी सहायता से मिला? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

प्रस्तुत प्रश्न को हल करने में कुछ परीक्षार्थियों ने यह बताने में गलती की, कि विचक्षणा महापदमनन्द के क्रोध का कारण क्यों बनी? उसको महाराज के क्रोध से छुटकारा कब और कैसे मिला?

*अध्यापकों के लिए सुझाव*

- विचक्षणा कौन है? इसका परिचय विस्तार से समझाकर बताया जाना चाहिए। विचक्षणा के क्रिया कलाप से जुड़े अध्याय का अभ्यास अच्छी तरह से कराया जाना चाहिए।
- परीक्षार्थियों को यह भी समझाया जाना चाहिए कि वे अपने उत्तर में घटनाओं का क्रमिक वर्णन करें।

**अंक योजना**

**Question 15**

विचक्षणा मगध सम्राट महापद्म नन्द की दासी हैं। वह महाराज की सेवा में नियुक्त थी। एक दिन महाराज भोजन करके उठे तो विचक्षणा सोने के पात्र में जल लेकर राजा के हाथ धुलाने लगी। हाथ धुलाते समय जल की नन्हीं–नन्हीं बूँदे, छीटें हवा में उड़कर धरती पर गिरतीं और सूख जातीं। सहसा महाराज हँस पड़े। राजा को हँसते देखकर विचक्षणा भी हँस पड़ी। विचक्षणा को हँसता देखकर महाराज ने तुरन्त उससे पूछा कि तू क्यों हँसती है? विचक्षणा का खून सूख गया। वह सिसकने लगी। महाराज ने फिर कड़क कर कहा, उत्तर दे, ''तू क्यों हँसी?'' उसने डरते–डरते उत्तर दिया कि महाप्रभु की हँसी में ही प्रजा की हँसी है। महाप्रभु हँसे थे अतः दासी भी हँसने लगी। प्रभो! दासी ने अपना धर्म निर्वाह किया है।

सम्राट ने मुस्करा कर कहा कि तू बड़ी वाकपट है, विचक्षणा! अच्छा, तो यह बता कि मैं क्यों हँसा? दासी सम्राट की टेढ़ी भ्रकुटि देख कर डर गयी और चरणों में लेटकर प्राणों की भीख माँगने लगी। सम्राट ने उसे ठोकर मार कर कञ्चु की लोमा को आज्ञा दी कि यदि ढीठ विचक्षणा मुझे मेरे हँसने का कारण न बता सके तो इसे राजभवन की सिंहिनी की गुफा में जीवित भेज दिया जाय। महादेवी के अनुरोध पर उसे उत्तर देने के लिए एक माह का समय दिया गया।

महाराज, दासी विचक्षणा की अनुशासन हीनता के कारण क्रोधित हो गये। विचक्षणा ने महाराज के सामने हँसने की धृष्टता की थी। सम्राट बड़े अनुशासन प्रिय थे। उनकी दृष्टि में अनुशासन हीनता दण्डनीय अपनाध था। विचक्षणा अपनी आत्मिक दुर्बलता के कारण महाराज के कोप का भाजन बनी और उसके प्राण संकट में पड़ गये।

विचक्षणा प्राणदण्ड के भय से पीड़ित थी। उसने आत्म रक्षा का अथक प्रयास किया जिसके परिणामस्वरूप चन्द्रगुप्त की माँ देवी मुरा ने उसे आर्य शकटार से निवेदन करने की सलाह दी। देवी मुरा की सलाह मानकर सम्राट की मुद्रा के सहारे आर्य शकटार के दर्शन करने कारागार गयी और उन्हें अपनी करूण समस्या बतायी। देवी मुराद्वारा प्रेषित जानकर आर्यशकटार को उसके प्रति सहानुभूति हो गयी और उससे दुख का कारण पूछा। विचक्षणा ने सारी घटना यथावत बताई। आर्य शकटार के कहने पर विचक्षणा ने सारी घटना का वर्णन पुनः धीरे–धीरे दुहराया। एकाएक आर्य शकटार ने पूछा, अच्छा उस दिन महाराज किस कक्ष में भोजन कर रहे थे?

विचक्षणा ने बताया कि मयूर का मांस बना था, दक्षिण–पूर्व के कक्ष में भोजन किया और आँगन में दक्षिण की ओर मुँह करके हाथ धोये। उस समय क्या दक्षिण वाले प्रमोदवन का द्वार खुला था? विचक्षणा ने कुछ सोच कर कहा कि हाँ देव, खुला था। आर्य शकटार ने पुनः पूछा कि क्या वहाँ से प्रमोद वन का वह विशाल वट वृक्ष भी दिखाई पड़ रहा था। दासी ने सिर हिलाकर कहा, हाँ।

तुरन्त आर्य शकटार ने हँसकर कहा, तू निर्भय हो विचक्षणा। तू जा अपने सम्राट को उनके हँसने का कारण बता दे। हाथ धोते समय पानी की छोटी–छोटी बूँदों को हवा में उड़कर धरती में समा जाते देख सम्राट को वटवृक्ष के बीजों की याद आ गयी थी। कितने छोटे–छोटे बीज होते हैं, राई के दाने सी भी छोटे! उड़कर वह भी इसी तरह धूल में समा जाते हैं। पर एक दिन वही नन्हा सा बीज विशाल वट वृक्ष बन जाता है। यही सोचकर सम्राट को हँसी आ गयी।

इस प्रकार विचक्षणा को सम्राट के हँसने का कारण बताकर आर्य शकटार ने उसे सम्राट के क्रोध से बचाने मे ंउसकी सहायता की। विचक्षणा के प्राणों की रक्षा करने में आर्य शकटार का सहयोग प्राप्त हुआ।

## <u>GENERAL COMMENTS</u>:

**(a) प्रश्न पत्र में कौन से विषय परीक्षार्थियों को कठिन लगे?**

- प्रश्न 1(c) 'शिक्षा का व्यवसायीकरण शिक्षा के स्तर में गिरावट का कारण है'– पक्ष/विपक्ष।

  प्रश्न 1 (f(i) & (ii)) किसी एक विषय पर मौलिक कहानी।
- प्रश्न 2(e) – प्रस्तुत गद्यांश को पढ़कर आपको क्या शिक्षा मिलती है?
- प्रश्न 3(a) (i) गर्म गाय का दूध स्वास्थ्यवर्धक होता है। (ii) कृप्या मेरे पत्र पर ध्यान देने की कृपा करें। (iii) प्रत्येक व्यक्तियों को यह कर्तव्य है।

  प्रश्न 2(b) मीन मेख निकालना।
- (Sec. B) प्रश्न 4, 7, 13 & 14

**(b) प्रश्न पत्र में कौन से विषय परीक्षार्थियों के लिए अस्पष्ट रहे :–**

- प्रश्न 1. (b) समाज सेवा–सच्ची मानव सेवा।
- प्रश्न 1. (e) जिसने अनुशासन में रहना सीख लिया उसने जीवन का सबसे बड़ा खज़ाना पा लिया।

**(c) विद्यार्थियों के लिए सुझाव :–**

- हिन्दी विषय के दो भाग हैं (1) व्याकरण (2) साहित्य। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे व्याकरण और साहित्य दोनों का ही अच्छी तरह से अध्ययन करें। व्याकरण में वर्ण, शब्द और वाक्य रचना की मार्मिकता को अच्छी तरह से समझे। इससे वाक्य रचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ, वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ नहीं होगी।
- निबन्ध को अच्छा लिखने के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं में आये निबन्ध, पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित की विषय वस्तु पढ़कर उसका उपयोग करने का अभ्यास करें।
- अपठित गद्यांश को तैयार करने के लिए विभिन्न लेखकों की पुस्तकें पढ़ें।
- पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी पाठ्य पुस्तकों को अच्छी तरह से पढ़ें, समझे उनके उपयोगी अंश को याद करें जिससे आवश्यकता पड़ने पर उत्तर की पुष्टि के लिए उन महत्वपूर्ण पंक्तियों को उद्धृत किया जा सके।
- हस्त लेख सुधारें, कार्य में स्वच्छता लाने का भरसक प्रयास करें।
- प्रत्येक प्रश्न का क्रमानुसार उत्तर दें, प्रश्न पत्र में जो संख्य प्रश्न के पहले जिस तरह लिखी है उसको उसी तरह अपनी उत्तर पुस्तिका में अंकित करें।
- प्रश्न पत्र मे दिये गये निर्देशों का पालन करें।
- उत्तर उतना ही दें जितना अपेक्षित है इसका ध्यान रखें। अनावश्यक विस्तार में समय और श्रम बर्बाद न करें।
- यदि प्रश्न के कई खण्ड हैं तो सभी खण्ड़ों का उत्तर क्रमानुसार तथा एक साथ ही देने की हर सम्भव कोशिश करें।